सुन्दरीचरित्र

अर्थात् दुर्गा पाठ भाषा

अनन्य कवि कृत

जिस में

सकल मनोरथ दायिनी भक्तजन रक्षा परायणी श्री जग दम्बिका दुर्गा जी के अभिलाष दायक चरित्र अनेक ललित भाषा छन्दों में वर्णित हैं॥

स्थान लखनऊ

श्रीयुत मुन्शी नवलकिशोर जी के यन्त्रालय में शुद्धता पूर्वक छपा

माह अगस्त सन् १८७६ ई०

इस महीने अर्थात् अगस्त सन् १८७६ ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तैय्यार हैं वह इस सूची पत्र में लिखी हैं और उन का मोल भी बहुत किफ़ायत से घटा कर लिखा है परन्तु ब्योपारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिन को ब्योपार की इच्छा हो वह छापे खाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम खत भेज कर क़ीमत का निर्णय कर लें॥

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
दुर्गा पाठ सटीक	अवध यात्रा	पद्मावती खण्ड आल खण्ड
अपराध भञ्जन स्तोत्र	ज्ञान चालीसी	भगवतीगीता
मार्कण्डेय पुराण	रस राज	मुहूर्त्त चिन्तामणि सारिणी
श्रीमद्भागवत सटीक १ स्कन्ध	सामुद्रिक	शब्दार्थ कोष
लघु कौमुदी	बारह मासी फ़क़ीर अलाबख़्श	लावनी वो शेर बनारसी
शङ्कर दिग्विजय भाषा	मनुस्मृति उर्दू टीका सहित	अमर विनोद
वैद्य जीवन	इन्द्रजाल नागरी	पाराशरी सटीक
किताबुपटवारी चार भाग	कथा शङ्कर जी	युगल विलास
बैताल पच्चीसी नागरी	रामायण नागरी	ज्ञान माला
दान लीला नाग लीला	रामायण जिल्द बन्धी	भाषा महा भारत मुक्तावली
ब्रह्म सार	रामायण तुलसी कृत	रमल सार नागरी
परमार्थ सार	रामायण तुलसी कृत सटीक	देवज्ञाभरण
प्रेम सागर	सत सई रामायण	जनक पच्चीसी
सूर सागर	कवितावली रामायण	सिंगार प्रकाश
रस प्रकाश	गीतावली रामायण	नानार्थ नौ संग्रहावली
भक्त माल	रामायण दोहावली	संग्रहावली
महिम्न स्तोत्र	कायस्थ कुल भास्कर	दूसरी पुस्तक रामायण माला
सभा विलास	क़िस्सह गोपी चन्द भरतरी	तीसरी रामायण गीत अष्टक
वैद्य मनोत्सव	शीघ्र बोध	चौथी ज्ञान दोहावली
लीलावती नागरी	श्री गोपाल सहस्र नाम	पांचवीं रस सारिणी
अमृत सागर	गणित काम धेनु	छठी तिथि बोध
अमृत सागर बड़ी	बहार बिन्द्रा बन	सातवीं पुस्तक भाव वन कृत
विक्रम विलास	हनूमान बाहुक	भरतरी गीत
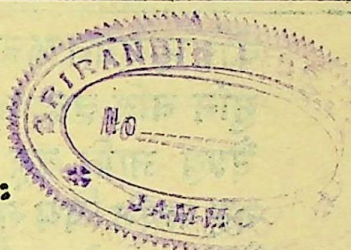
ॐ श्रीगणेशाय नमः

अथ सुन्दरीचरित्र अनन्य कवि कृत लिख्यते

राम दूत

॥दोहा॥ सुन्दर पद गुरु नाथ के सुन्दर गुरु उपदेश ॥
सुन्दर चरित भवानि के सुन्दर सुरथ नरेश ॥१

त्रिकल

॥दोहा॥ सुरथ धरम राजा भयो केवल धरम निधान ॥।
सकल नगर कुल जन प्रजा पालहि पुत्र समान॥२

वल

॥दोहा॥ नृपति भार मन्त्रिन दियो आपु करत सुख मोद ॥
कै नित नेम शिकार को कै रस वाम विनोद ॥ ३
तब शत्रुनि व्यवहार लहि जान्यो नृपति अचेत॥
देश मारि उघरो नगर सब परि वार समेत ॥ ४ ॥
राजा मन्त्रिन वल रहे मंत्रिन कियो विस्वास ॥
जाय मिले सब शत्रु लहि नृपति भागि वन वास॥५
मन महं राउ बिसूर ही करि करि सब को शुद्धि॥
अपने दुख तन खबरि नहिं परी मोह वस बुद्धि॥६
तौलों देखो वृद्ध यक रोवत भूरवत गात ॥ ॥

कोहै तू रोवत कहा नृप पूछी यह बात ॥ ७ ॥
सुनि वहि वृद्ध जवाब दै मेरो नाम समाधि ॥
वैश्य जाति बहु धन कुटुम भयो बुढ़ापै व्याधि ॥८
वृद्ध जानि त्रिय सुतनि मिलि दीन्हों मोहिनि कारि॥
मैं उन को रोवत फिरतु सकत न मोहिं बिसारि॥ ९

राजो वाच

जिन तोको बहु दुख दियो दियो बुढ़ापै काढ़ि ॥
तिन को तू रोवत कहा मोह विषय मन बाढ़ि ॥ १०

वैश्य उवाच

उन मोको बहु दुख दियो मेरो मन उन माहिं ॥
मोह न छूटै राज सुन मन मेरो वस नाहिं ॥११॥
सुनि राजा तिहि संग लै गत मेधा ऋषि पास ॥
ऋषि पूछी तुम कौन हो चकित फिरहु उदास॥१२

राजो वाच

हम राजा यह वैश्य है भृत्य नि दियो निकारि ॥
हम उन को रोवत फिरत सकत न मोह संभारि॥१३
मोह फांस यह है कहा को व्याप्यो मन माहिं ॥
यह कारन कहियो गुरू समझ परति कछु नाहिं॥१४

ऋषि रुवाच

तोमर छंद

सुन राज राज प्रवीन । मन शक्ति के आधीन ॥
श्री आदि शक्ति भवानि। द्वै शक्ति तिन ते जानि॥१५
विद्या अविद्या नाम । तिन के दुपद परिनाम ॥
विद्या सो ज्ञान सरूप। मोहक अविद्या भूप ॥ १६॥
जग है अविद्या अन्ध। परि मोह पासिनि धन्ध ॥
धरि जन्म मिथ्या गात। नित जात खात कमात॥ १७॥

जे भजत आदि भवानि। कारन करन पहिचानि॥
तिन करति निधा युक्ति। मुनि सिद्धि जीवनि मुक्ति॥१८

॥दोहा॥ कारन बंधन मुक्ति को आदि भवानी जानि॥
सकल सिद्धि आनंद करन सब लायक जग रानि॥१६

राजो वाच

तोटक छन्द

सुनि राज करी बिनती तबही। मन गाय सुनी समरीश्वबही
कहिये सुकृपा करि देवि सबै। कित ते उपजी कित है अब कै २०

श्री ऋषि रुवाच

मूल निया नंत सरूप मई यह जानिये
उपजति बिन सति नाहि अनादि बखानियें॥
देवनि संकट परत प्रगट तब है तिहै।
वह अविगत सुनु राज सनातन जोति है॥२१॥

दोहा॥ प्रलय समय जब सिन्धु में सोवत थे हरि आपु॥
व्यापक तिनकी देह में निद्रा रूप प्रतापु॥२२॥
सोवत हरि की नाभि ते भयो ब्रह्म अवतार॥
मधु कैटभ पुनि श्रवनि ते भये असुर विकरार॥२३॥
तब संकेतहि देखि विधि हरि सोवत जल मांहि॥
क्यों यह जागे जगतपति और सहायक नाहि॥२४॥
यहि विचार मन ध्यान धरि ज्ञान निरन्तर लेषि॥
अस्तुति करि जग मात की प्रेरक शक्ति विशेषि॥२५
तबै कृपा करि ईश्वरी शक्ति लई वह खैंचि॥
जावस हरि सोवत हुते मन वच बुधि वल सींचि॥२६॥
तब हरि सों उन खलन सों युद्ध भयो वर जोर॥
पंच सहस्र वर्षै भई घटै नहीं वल घोर॥२७॥
तब असुरन कहं ईश्वरी प्रेरक किय तिहि ठौर

तिन ही के मुख वाक छल कही और की ओर ॥ २८॥
अब हरि तुम मारो हमैं धरि जंघन पर शीघ्र ॥
सुनत सुरत धरि चक्र सों सिर काटो जग ईश ॥ २९॥
इहि विधि विधि विरुदादि कह संकट देवि सहाय ॥
अब सुनि नृप इन्द्रादि हित जो प्रगटी जग माहिं ॥ ३०

इति श्री मार्कण्डेय पुराणे सावर्णि के मन्वन्तरे देवी माहात्म्ये मधु कैटभ वधः प्रथमो ऽध्यायः ॥ १ ॥

दण्डक छन्द

बाढ्यौ महिषा सुर प्रचंड वलि वंड महा जाकी धाक सुनि कै विधाता धकपक्यो है ॥ ढाहत गढ़ कोटन गिरावत गिरि शृंगन सों खुदत खुरनि धरा शेष सकपक्यो है ॥ सातो दीप दपट समुद्र दहि चाल कर सूर शशि तारेन को पलक परो क्यो है ॥ अक्षर अनन्य जाहि आवत सुनत कान देवन समेत भागि इन्द्र अकपक्यौ है ॥ ३१॥

सोरठा ॥ भागत इन्द्र तत काल गयेत्रि देवन के निकट ॥
कह्यौ तहां सब हाल छोभ भयो उन के हिये ॥ ३२॥

दोहा ॥ तब सब देवनि अङ्ग ते कढी शक्ति इक राय ॥
तेज पुंज प्रज्वलित अति रही अग्नि छिति छाय ॥ ३३॥

मोती दाम छन्द

तवै सब देवनि स्तुति कीनि। दया करि देवि हमै लखि दीनि ॥
सह्यो न परै तुव तेज अनन्त। कृपा करि दीजे मूरति वन्त ॥ ३४ ॥
पती सुनि कै तजि तेज प्रजोर। भई मृदु मूरति वैस किशोर ॥
धरे भुज आठ त्रिलोचन चारु। करै अरचा स्वर शेस अपारु ॥ ३५॥
मुरारि दियो कर चक्र विचित्र। विरंच कमण्डल दीन पवित्र ॥
त्रिशूल दियो शिव शंकर आपु। सुरेश दियो निज वज्र प्रतापु ॥ ३६॥
दई शक्ती करमैं जल पाल। सुचर्म दियो निज काल कराल ॥

दई जम पास विना सन शत्र। दियो वड़वा धन धान सो अन्न॥३७
दियो मारि भूषण सिंधु सुहार। कियो कमला रति सर्व सिंगार॥
हिमाचल वाहन सिंह सुदीन। भई तिहि पर असवार प्रवीन॥३८
भुक्यो उतते महिषासुर आय। खदे रतु देवान संग स्वाय॥
तबै सब देवनि आपु पछेलि। भुको अरि गंजन मात अकेलि॥३९॥
केते दल बान न दीन उडाय। केते दल वज्र नि गंजि ढहाय॥
किते दल शूल नि हूलनि मारि। केते दल चक्रनि खंड संघारि॥४०
केते दल खड्गनि पट्टनि खंडि। केते दल सेथिन मारि विहंडि॥
हन्यो सिगरे दल संगर खेलि। रह्यो महिषासुर आपु अकेलि॥४१॥
इति श्री मार्कण्डेय पुराणे सावर्णि के मन्वन्तरे देवी मा
हात्म्ये महिषासुर सैन्य वधः २ द्वितीयोऽध्यायः॥

दण्डक छन्द

कबहूं महि खड्है के अंगनि चलावै गिरि कबहूं ह्वै मग भुहै कैडफ
ने करतु है॥ कबहूं गयन्द ह्वै के घोर गल गाजतु है कबहूं के सिंह ह्वै
के सिंह सो लरतु है॥ कबहूं बिलाव ह्वै के लूक भूकत फिरै असुर
अनन्य भेष केतक धरतु है॥ जोई घास करै देवि सोई पलटतु रूप कों
हू महिषासुर न पासि में परतु है॥४२॥

दोहा॥ तब अम्बा अति कोप करि उतरि सिंह ते आप॥
दियो पांव अरि ग्रीव पर क्यों सहि सकै प्रताप॥४३॥
ग्रीव दाबि के चरण तर छाती हन्यो त्रिशूल॥
महिषासुर मार्यो प्रबल सब असुरन को मूल॥४४॥

सवैया॥ मारि महा महिषासुर को गरजी रन में रल गंजन रानी॥
विष्णु विरंचि महेश सुरेश करी बहु अस्तुति वेद प्रमानी॥
दै सब को वर दान अनेक भई तब आपुनु अंतरध्यानी॥
फूलि सबै सुर राज करैं सु भुजै भय भंजनि नाम भवानी॥४५॥
इति श्री मार्कण्डेय पुराणे सावर्णि के मन्वन्तरे देवी

माहात्मे महिषासुर बध स्तुतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

सक्रादि स्तुति

दोहा॥ इहि विधि सों श्री भगवती हन्यो महिष धरि सेहु ॥
अब सुनि शुंभ निशुंभ प्रति कथा नृपति सुनि लेहु ॥ ४६

पद्धरी छन्द

बहु नृप शुंभनि शुंभ राइ। दिति तनै अदित सुत त्रास दाइ॥
नृप शुंभ छत्र पति बंधु जेइ। तिनते निशुंभ लघु बंधु हेइ॥ ४७॥
दुव बंधु परम समरथ सुसील। सुमेर समान प्रलम्ब डील ॥
अति मायावी बल सिद्ध कुद्ध। दस दस हजार भुज परत युद्ध॥ ४८
तिन युद्ध जुरन समरथ्थ कौन। थर थर कम्पत जल अग्नि पौन॥
धर धच कै तौ पताल जाहि। स्वासनि देहे पर्वत उड़ाहि॥ ४९॥
अस प्रचंड जुग राज गर्व। सुर असुर चर्न सेवत स सर्व ॥
तिन अग्र भाग रक्तारि विंद। गज कोटि प्रबल दल तारि मिंद॥ ५०
दल पति ह धूम्र लोचन कराल। जिहि देखि कंपे कलि काल काल
पुनि चंड मुंड जोधा प्रचंड। विकराल रूप दल बल अखंड॥ ५१॥
दल असुर जूह सम्मूह छाइ। राजत समस्त जनु काल राइ ॥
इमि शुम्भनि शुम्भ नरेश बहु। सन सुख्य रहे नहि मात्र टहु॥ ५२॥
बहु वार दिशु हारे ते युद्ध। अस तिलक लीन नृप शुद्ध शुद्ध ॥
विधि कौ सोहू लीन्हो है छड़ाइ। दिग पाल बंदि कीन्यो रिसाइ॥ ५३
भंडारि लूटि लीन्हो कुबेर। स्थान छीन लीन्हो सुमेर ॥
लिय सावकरन सब वारु जिन्न। सागरहि काढ़ि लिय रतन चिन्न॥ ५४
अपने करि सूरज चंद्र थाप। थपे लोक लोक सानो प्रताप ॥
जम काल मृत्यु कुल बंदि कीन। थपे आपु शेष शिर भार दीन॥ ५५
कुल सहित इंद्र दीन्यो निकारि। लिय सेरा वत है और रि॥
किय इंद्र लोक रज धानि राज। सुरवनि ह कंटक दानौ समाज॥ ५६

महान राज छन्द

समाज दैत्य राज नित्य राज संचि राज ही समस्त देव राज सेव राज सेवत हवै। त्रिलोक सप्त द्वीप खंड नो अखंड मंड के ब्रह्मंड एक विश्व को महाय आनन-हवै॥ भने अनन्य अन्य राव चाव देखिये नहीं विशेष छत्र छत्र पत्ति नाथ शुंभ च हवै। विरंचि विष्णु जित्य कित्य बोधिके प्रसाद भो प्रमाद सर्व शुंभ ही निशुंभ शुंभ च हवै॥ ५७॥

चंचल छन्द

चक्कवे निशुंभ शुंभ सभ्रवी महा प्रसाद ॥
भाजियो समस्त देव लोक लोक भो विपाद ॥
सोक के विरंचि विष्णु सोचि के कियो विचार।
सर्व के अधार आदि शक्ति सो करो पुकार॥ ५८॥

कुंडलिया

यहि विधि विधि विष्णादि सुर करि मम तुरत सिधारि। हेमा च-ल गिरि पर गये निज स्थान निहारि॥ निज स्थान निहारिमात आपुन जहं राज हि। महा पार वती नाम हेम परवत छवि छाज हि॥ तहि ठिकान सुर सकल विकल वरनहु गति किहि विधि। करि प्रनाम जुरि पानि विनै करुना कृति इहि विधि॥ ५९॥

छन्द जोती दास दंडक॥

देव उवाच

जाति रूप जोति रूप सत्त रूप सिद्धि रूप गुरा रूप ज्ञान रूप सोभा रूप सोही है। इच्छा रूप क्रिया रूप दया रूप माया रूप त्रिया रूप बल रूप वानी रूप मोही है॥ आसा रूप प्यासा रूप निद्रा रूप छुधा रूप चित्त रूप बुद्धि रूप चेतनता जोही है॥ नाना रूप व्यापक प्रकाश सब शक्ति रूप जत्त में अधार जत्त माल

एकतोही है ॥ ६०॥

छप्पे॥

तुहीं जत्त आधार शक्ति माता भैभंजन। निराधार सुर सकल विकल तुव शरण निरंजन ॥ दीन्हौ अरिन निकारि हारि कोइ बातन बुझहि। तुव आसा लिय आय विपिनि कोइ ठौरन सुझहि ॥ तुव अब तब जब आसा तुही आदि मध्य अन्त हि भननि। आवत लच्छ निरच्छ ही सुरक्ष रक्ष समरथ जननि ॥ ६१॥

छन्द

समरथजननि भय भंजनि विरद तेरो महा भय भीत हमें भयते निवारि ले। गरीवनि वाजिनी गरीव सी विदित वानो जानि के गरीवान निवाजसी विचारि ले ॥ अक्षर अनन्य भने करुना निधान वानि करुना सुजानि दीन देवतानि तारिले ॥ मारत निशुंभ शुंभ संगर संघारत है आरत निहारि देवि अब्बके उवारिले॥ ६२॥

सवैया

ज्यों मधु कैटभ को वध के विधि राखिलियो अपने कर कंजनि॥
ज्यों महिषासुर को हति कै सुर पालि सबै सुख दै दुख गंजनि॥
त्यों वो पुकारत आरत है हमें मारत शुंभनि शुंभनि रंजनि ।
दीन विचारि दया करि कै अब रक्षहमें सबै भय भंजनि॥ ६३॥

दोहा॥ इमि देवनि स्तुति करी दानव डरनि विहाल ॥
तौलौं निकसी पार्व्वती मंजन को तिहि काल॥६४॥
देखि सुरन श्री पार्व्वती वचन कहे मुख एव ॥
किहि की स्तुति करत हौ कित आये सब देव॥६५॥
यती कहत श्री गौर मुखि निकसी शक्ति अनूप॥
तानिकसत श्री गौरि को है गयो श्याम सरूप॥६६॥
देखि गौरि ठाढ़ी भई अजब अम्बिका शक्ति ॥
ज्वाव दियो उन गौरि कहं जानि सुरन की भक्ति॥६७॥

ईश्वरी उवाच

सोरठा॥ असुरन डर करि गौर मेरी अस्तुति करत सुर ॥
तिहि कारन सुनि गौर स्वयं सिद्धि प्रगटी सो मम॥६८॥

छप्पे॥

स्वयं सिद्ध औतार स्वयं सोभा तन सोभन। स्वयं जोति आकार स्वयं विद्या गुण शोभन॥ स्वयं शास्त्र संयुक्त स्वयं ऐश्वर्य्य प्रवर्तन। स्वयं सैन सम्पन्न स्वयं कृत कर्म निवर्तन॥ चढ़ि स्वयं सिद्धि निजु सिंह पर ब्रह्मादिक संकट हरन। हैं प्रगट अम्बिका रूप तुमि स्वय सिद्धि समर्थ जनन॥६९॥

सोरठा॥ समरथ जननि अधार श्री भवानि भय भंजनी॥
करन असुर संहार प्रगट अम्बिका रूप भुत॥७०॥

छन्द त्रिकूटगति

हैं प्रगट अम्बिका रूप उदित त्रिविधि सिंह विवान
सुदित अस्त्र शस्त्र प्रभाव मुदित अभिभूत अद्भुत काइ॥
निज प्रेम जोति प्रभाव पूरित सच्चिदानंद मूल सूरित
कोटि चंद सुछंद सूरित सुप्रकाश प्रभाइ ॥
तुमि श्री भवानि स्वरूप दर शत अमर मुनि जनि प्रेम सरसत
नैन नीर प्रवाह वरसत सरसत उर अनु रागि ॥
किय प्रनव कोटि त्रंग काय निकरत स्तुति विविधि भाय
निरधनि जिमि धन को पाय निति मिहि पायन लागि॥७१॥

मृदुल छन्द

पायन लागि रहे यहि विधि सुर विधिवत पूजि पूजि मन कामना।
श्री जननि धर स्तुतिन की सुर सब भक्ति भक्ति मन भावना ॥
कीन सुभय भीत जानि भयन्न भय रहु मम राज राज वत वालिका।
तुम हित को पांउ मंडि मंडि रन खंडि असुर समस्त सुर सालिका॥७२॥

छन्द

इमि जननि वचन बखानियो। सुन सुरनि जीवन जानियो ॥
करि प्रनव परम प्रमो दयो । सो नृ भय भय सब को दियो॥७३॥
सोरठा॥ तव समरथ जग माय । अंबर छिपायो कंदरा ॥
आपुनु समर उपाय। रतन शिखरि राजी जननि॥७४॥
दोहा॥ रतन शिखर राजी जननि धरि अति अद्भुत रूप ॥
नीव दई संग्राम की जासु नि मोहे भूप ॥ ७५॥

हंस छन्द

तहां आय कहुं असुर समूह। ढूंढत सुरन करन रन कूह ॥
रतन शिखर दरसी जग माय। जगमग जोति ज्वलित छवि छाय॥७६

गीतिका छन्द

दिव्य सिंहासन विराजति दिव्य मूरति बालिका ॥
दिव्य भूषण वसन सुंदर दिव्य जोतित्रि पालिका ॥
दिव्य मानिक मुकट जगमग दिव्य मणि ता टंक हैं।
दिव्य नैन विसाल झलमल दिव्य भृकुटी बंक हैं॥७७॥
दिव्य लाल ललाट सो है दिव्य मुकता नासिका ॥
दिव्य हार सो ढार हिरदे दिव्य जोति प्रकासिका ॥
दिव्य अंगद बाहु मंडित दिव्य कंकन कर लसै ॥
दिव्य सुंदर अत्र मुकता दिव्य किंकिनि कटि लसै॥७८
दिव्य पैं जनि पांय घुंघुरु दिव्य नूपुर अति बने ॥
दिव्य रूप सिंगार नख शिख दिव्य भूषण है घने॥
दिव्य पुहु पनि पानि किंदुक लील ही उर धारही ॥
इमि लसत दिव्य सरूप देवी दृष्टि कौन पसारही॥७९

इति श्री मार्कण्डेय पुराणे सावर्णि के मन्वन्तरे देवी माहात्म्ये सक्रादि स्तुति समाप्ता ४ चतुर्थोऽध्यायः॥

देवी का और दूत का वाक्य

दोधक छंद

अद्भुत जोति प्रतापी। बात कछू न सकै कहि पापी॥
चहत न है मुख के सब साता। जाय कही नृप सों यह बाता॥८०

मोदक छन्द

सुनहु नृपति हम हिम गिरि गाता। एक अमर कन्यहि रज ताता॥
ज्वलित जोति अति करति हि तापा। लेहु बुलाय जगत पति शापा॥८१

दोहा॥ सुनत राय सुख पाय के दूत भेज तत काल ॥
गयो पतित साजति जहां जगत जननि तन बाल॥८२

मुरिल छन्द

जगत जननि तन बाल रतन गिरि राज ही॥
कोटि चंद सों छूंत परम छवि छाज ही ॥
देखि दूत चित चकित हिये डरि आपतें ॥
परि हां करि पर नाम जुरि पायनि वानतें॥८३॥

देव्युवाच

अरिल्ल छन्द॥

लहि प्रनाम चितई जग वंदनि। त्राहि त्राहि भाषहि सुर चंदनि॥
बूझि प्रश्न कसि तू भ्रम भुल्यो। सुनत दूत कर जोरति वुल्यो॥८४॥

दूत उवाच

चतुष्पदी छंद

सुनिये सुर नंदिनि त्रिभुवन चंदिनि हों नृप शुंभ पठायो ॥
सुनि तुव गुण रूप हि सुन स अनूपहि भूपति माहि मन लायो॥
चलि उठि आपुन तजि हठु तापुन नृप सों को फल लीजे ॥
सेवे शिव पादूनि हो ठकुरादूनि राजिन्नि पुर को कीजे ॥८५॥

देव्युवाच

धतानंद छंद

सुनि दूत वचन द्युति रन उदित चित जगत जननि वुल्लि पवयन।
[illegible] निसम कौरत मोसम चलहु आजु जाके अयन॥

मो गरब बाढ्यो अति पर को पति को कोपि छार त्रिभुवन करहु।
मोहि जीत सकै रन हेर सकै तन मद मरदै मम तोहि वरहु॥८६॥

तोटक छंद

सुन दूत महा मन रोष बढ्यो। भनि हिय्य कह्याम धु तोहि चढ्यो
नृप शुंभ निशुंभ अभूत वली। सब देवन की जिनि सैन दली॥८७॥
तिहि के डर भागि दुरी हरि हैं। तिहि सों किमि तैं अबला लरि हैं॥
चलि मानि कह्यो सुख राज करो। कित पावक पुंज पतंग जरो॥८८॥

देवी उवाच

मोटक छन्द

सुनत जननि भनि गज तु किन्तु सठ। मम तपसिनि किमि तजहु अ
पु हठ॥ समर स्वयंवर हमरे ये कह। करन समर नृप अगुजाय
कह॥८९॥

दोहा॥ सुनत दूत आतुर गयौ कह्यो नृपति सों जाय॥
युद्ध स्वयम्बर उहि रच्यो चलहु सुसजिहि जराय॥९०॥

पद्धरी छन्द

सुनि राय तुरत धुम्राक्ष बोल। दिय पानहु कुमसो अहै रसोल॥
मारियो समर्थ जो करि सहाउ। गहि के झकि सोरी पकरि ल्याउ॥९१॥

सरस्वती छन्द

सुनि धूम्रलोचन सूर लै नृप नाथ को सिर नायकै॥
सहस दैयत संग सजि कै पहुंच्यो हिमां चल जायकै॥
सैना सुरत ठाढी हि कै चढि रतन शिखर आप ही॥
दरसी तहां जग जननि कन्या रूप प्रेम प्रताप ही॥९२॥

सोरठा॥ परम प्रताप अपार श्री भवानि भय भंजनी॥
देखि असुर तिहि बार रह्यो चकित चक वायकै॥९३॥

आभीर छंद

देख जननि भनि बैन। कौतू चित्त वत्त नैन॥
सुनिही कै दलपाल। बोल्यो बोल कराल॥ ९४॥

धूम्र लोचन उवाच

दोहा॥ तू जो कही नृप दूत सो युद्ध स्वयंवर चाउ॥
हौं गहि केशहि लये चलतु केहि की करत सहाउ॥ ९५॥

लघुनराच छन्द

यती सुनत संकरी। कछुक स्वस हुंकरी॥
जर्यो सो दुष्ट दारभो। छिनक माझ छारभो॥ ९६॥

नराच छन्द

जरंत धूम्र लोचने समस्त सैन धाइये। महा कराल काल से स-राल क्रुद्ध छाइयो॥ अनंत अस्त्र शस्त्र छाडि मंडि युद्ध रिंध को। सो देखि मात हं कि कै हुंकार दीन सिंह को॥ ९७॥

महानराच छन्द

हुंकार पाइ सिंह पिंगु हिंगला जमात को। नृसिंह ने प्रसिंह जोर घोर गर्व की लह्यो। परयो कराल काल से विसाल पुच्छ कढ्ढि कै तब छिकै प्रकोप ओप बढ्ढियो हुसील ही॥ भनै अनन्त चाव चन्द भि-न्न भिन्न सैन की त्रिनैन की प्रभा जथा तथा प्रभाव डाल ही। विदारि ठौर ठौर कौर कौर कीन्ह भक्ष ही समस्त रक्त गन्द भक्षली लि लीन लील ही॥ ९८॥

मनोरमा छन्द

लीलि लीलि लील हिय सैन सब नैन ल अलि अप्पल प्रभंजनु।
मर्दि मर्दि कारि मर्द मर्दि रिपु कीन मर्द तन आन सु भंजनु॥
निरखि हर्षि सुर बर्षि पहुंप झरि झरि लखि सुध योधारन रंजनु।
झारि भूमि मर भूमि रंन गंजि गज निगजि गंज सोइ गंजनु॥ ९९॥

रोला छन्द

प्रवल केशरी सिंह सत्र मारि गिरि जाइ सो ॥
असुर भागुल नि दौरि रौरि कीनिय नृप राय सों॥२००
सुनत नृपति अति कोप चंड मुंड दियो आयसु ॥
ल्यावहु अबलहि प्रवल मारि सिंह हि धिरिपायसु॥२०१॥
इति श्री मार्कण्डेय पुराणे सावर्णि के मन्वन्तरे देवी महात्म्ये धूम्र लोचन वधः ६ षष्ठो ऽध्यायः॥

छप्पै

राज हुकुम दल साजि गाजि धाये गण दैयत ।
करत सोर वर जोर घोर गर्जत मद मैयत ॥
अति कराल विकराल लाल चक्ष नि वल गर्वत।
लीन हरनि धनु सरनि करनि कैरत तरु पर्वत ॥
आकूत अनंत अनन्य भनि निरखि अमरसैनाडरिय॥
इमि चंड मुंड अवलोकि तन सुलोक लोक खल भल परिय॥२०२

तोमर छन्द॥

लोक लोक खल भल परिय। इमि चंड मुंड सैना चलिय ॥
हंकि हंकि वंकट विकट। आनि गर्जि गिरि वर निकट॥ २०३॥

तोमर छन्द॥

तब जन निदान वनि देखिय। इति सिंह अकेलि विशेखिय॥
तहां कोपि भृकुटी चढ़ाय। वलि कालिका उपजाय ॥२०४॥
रुप जीति कालि कराल। श्रीजननि रोश रिसाल ॥ ॥
तन श्यामता सुसखीनि। घन सघन केशव खीनि॥२०५॥
भृकुटि कुटिल जोट वार। अति भल फल के ललार ॥
गिरि कंदरा सुर नाभ। अति पवन पुञ्ज प्रभाभ ॥२०६॥
ना सेति वसन अनन्त। सिखि रहि सुदन्त लसन्त ॥ ॥
रसना अरुन अति घोर। दृग अग्नि कुंड प्रजोर ॥२०७॥
दाढ़ीलि रोम शरीर। है नाभि समुद्र गंभीर ॥

प्रज्वलित पर्म प्रचंड। आनन सो भुज वर दंड ॥१०८॥
करि पासि असि धनु बान। पग धरनि सिर असमान ॥
अति विकट भ्यानुक गात। गज चर्म ओन चुचात॥१०९॥
उर रुंड मुंडन माल। उर गगन है फत ढाल ॥ ॥
वल प्रबल प्रस्व सवार। किय जननि चर्ण ज्वहार॥ ११०॥

महान राज छन्द

जुहार जत्त मात को सुमात कालिका कही।
बढी धकोप ओप मन्न लोभ चित्त भाइगे।
खर्ई लिच्यू अकास लो बकास दीसि प्रेन ही।
प्रकास तेज पुञ्ज रोम रोम रोष छाइगे॥
भनै अनन्य भेष भिन्न छोभ वक्र को कहै
त्रिलोक है प्रकृत भूत प्रेत ताप ताइगे।
सो देखि दान वान केन जानि प्रान किं गये॥
गजंत सिंह ज्योस सेस पोव ही ससाइगे॥१११॥
ससाइगे दयत्त सर्व देखि कालि चंडिकै प्रचंड।
चंड मुंड चंड त्रान लीन त्रास ही । ।
कुवार खड्ग तो भरो त्रिशूल चक्र साइकै॥
ससाय कै समस्त अस्त्र शास्त्र वर्ष भाल ही॥
भनै अनन्य यों अनंत अत्रकं जि ते चले।
किते कली लि लीन देवि वक्र में विलास ही॥
समस्त रत्त जस पक्ष हत्थ पैलु ढाय कै॥
उडंत दुम्वि सनि एक स्वास की उसासही॥ ११२॥
उसा सही उडंत आस पास दीह दैयता ।
प्रमै यताइ संत अट्ट हास रास चाहिनी॥
गजंति कोटि गंजसी सुवाजसील वानि ज्यों।
भवा निदान वानि की समान सैन दाहिनी॥

भनै अनन्य भिन्न कर्म भेर वीति सैर वीसोखलिरै
खिलंति दन्ति पन्ति स्वर्ग स्वाहिनी ॥ ॥
प्रचंड चंड मुंड के सुहंड गुथ्थि कै सही ।
अखंड स्रोन सिंह को पियन्ति प्रेत वाहिनी॥२२३
पियन्ति श्रोन सिंह सैन सर्व को प्रहारिकैं ।
अहार कै डकार संच कार मन्त्र सालिका ॥
विदारि चंड मुंड रुंड मुंड गुंथि मालिका ॥
विसाल माल डारि चर्म ओढि रक्ति लालिका॥
भनै अनन्य जैति चिन्ति जिन्ति जुद्ध ज्वालिका।
प्रभूमि के प्रमत्तरंग भूमि चंडि चालिका ॥
अटट्टहास रास आस पास रूप ज्वालिका ॥
सो अग्र जक्त मात के न चंलि मात कालिका॥२२४
दोहा॥ कोटि काल वल कालिका गंजे असुर कराल ॥
भागि भगोलनि रौरि किय सभा शुंभ भूपाल॥२२५
इति श्री मार्कण्डेय पुराणे सावर्णि के मन्वन्तरे देवी माहात्म्ये चण्ड मुण्ड वध ७ सप्तमोऽध्यायः॥

पद्धरी छन्द ॥

सुनि रौरि रोश पर जरित रिन्द। दिय पान वोल वल रक्त विन्द॥
तव रक्त विन्द लै पान गज्जि। मत काल चल्यो वहु सैन सज्जि॥२२६
पच्चास कोटि सावथ प्रचंड। लक्षनि रक्षस दैयत अखण्ड ॥
अर्वनि गयन्द खर्वनि तुरवार। पद्मनि पै दल लागे पुकार॥२२७॥
इमि रक्त विन्द दल साजि धाव। कुंकरत दैत्य अति युद्ध चाव ॥
धरि धचकि लचकि अकुला न शेस। अति कंपु भयो वसुधा कलेस॥२२८
तिन देखि जक्त माता विचार। काली अकेलि किमि सकहि मार ॥
इमि चिंति मात चित मुद्रि नैन। प्रगटी तुरत्त मुख शक्ति सैन॥२२९॥
निज ब्रह्म शक्ति कढि हंस नंदि। धरि ब्रह्म रूप जिन स्त्री सुछंदि ॥

पुनि विष्नु शक्ति कढि गरुड़ रथ्य। है विसु विश्व पालहि समथ्थ॥२२०
पुनि रुद्र शक्ति कढि च ढै नन्द। है रुद्र प्रलय त्रिभुवन निकन्द॥
पुनि इन्द्र शक्ति कढि चढ़ि गजिंद्र। जिनि र ग्रह यौ धरि रूप इंद्र॥२२१
कौमारि शक्ति कढि चढ़ि यं सोर। कौमार रूप सुर वन्दि छोर॥
वाराह शक्ति कढि महिषं चढ्ढ। वाराह रूप धरि धरनि डह्ह॥२२२॥
नर सिंह शक्ति कढ़ि अति प्रचंड। नर सिंह रूप जि न असुर खराड॥
पुनि कढ़ी भद्र काली कराल। सम काल शक्ति काली अराल॥२२३॥
पुनि शिव दूती कढ़ि कालदंड। चढ़ि काल शक्ति प्रगटी प्रचंड॥
पुनि पवन शक्ति प्रगटी प्रजोर। अरु अग्नि शक्ति उप जीति घोर॥२२४॥
पुनि वरुरा शक्ति प्रगटी गंभीर। कौवेरि शक्ति गिरि मेरु धीर॥
इत्यादि देव शक्ति जे अर्व। जग मात स्वास प्रगटी ति सर्व॥२२५॥

कुराडलिया छन्द

प्रकटी इमि जग मात मुख देव शक्ति सब आनि॥
सव देवन की देह मह ये वर दायक जानि॥
ये वर दायक जानि करन चित निकृत कायक।
इन विन वे लघु मान इन हि भजि वे सव लायक॥
इन लगु उन वल तेज इन कवहूं बल नहि घटी।
महा प्रलय सव शक्ति जगत माता मुख प्रगटी॥२२६॥

सोरठा॥ प्रगटि शक्ति इमि सर्व किय प्रनाम जग जननि कहं॥
जननि जानि रिपु गर्व रन गंजनि आयुस दियो॥२२७॥

सवैया॥

लहि आयसु धाय विसाद सुरी गलि गर्जि परी भक रुराडनि में॥
जित ही जित दैयत आनि अरे तित ही तित मारहि मुंडनि में॥
भन असुर व्योम महारिपु छैरति पैरति श्रोनित कुराडनि मैं॥
वल केहरी ज्यों दल केलि करै अरि कुञ्जनि पुञ्ज प्रतिभुराडनि मैं॥२२८

नराच छन्द

सुभराड शत्रु सैन मै सु शक्ति सर्व गर्ज ही ।
जहां तहां निहार कै सम्हार मार वर्ज ही ॥
कहूंक ब्रह्म शक्ति ब्रह्म शस्त्र शत्रु खंड ही ।
कहूंक विसु शक्ति विसु शत्रु मारु मंड ही ॥ २२६ ॥
कहूंक रुद्र शक्ति रुद्र शस्त्र शत्रु चूर ही ॥
कहूंक इन्द्र शक्ति इन्द्र शस्त्र दैत्य पूर ही ॥
कहूं वराह शक्ति वार शस्त्र मोर मंज ही ।
कहूं नृसिंह शक्ति सिंह शस्त्र शत्रु गंज ही ॥ २३० ॥
कहूं कुमारि शक्ति मारु सस्त्र सो विदार ही ।
कहूंक अग्नि शक्ति अग्नि शस्त्र फौज जा रही ॥
कहूंक पौन शक्ति पौन शक्ति सों उड़ावही ॥
कहूंक नीर शक्ति नीर शक्ति सों बुड़ावही ॥ २३१ ॥
कहूंक काल शक्ति काल शस्त्र शत्रु छै करै ।
कहूंक कृष्ण शक्ति कृष्ण शस्त्र युद्ध जे करै ॥
अनंत देव शक्ति अस्त्र शस्त्र यों तनं धरी ।
प्रमत्त रक्त विन्द की समस्त सैन संघरी ॥ २३२ ॥

चामर छन्द

सैनि सर्व संघरी सुरक्त विन्द देखिकै। कोपिकै प्रचराड वान लीनतीरव सज्जिकै समर्थ रथ्य गाजि वाजि पिल्लिकै। मीचु ज्यो डरै सि सिद्धि शीश कै । प्रान मिल्लि कै॥ २३३॥

मुच कुन्द छुन्द

सीस प्रान मिल मिल्लि युद्ध कढ़ क्रोधरूप दल पति कढ़ं ।।
अति कराल विकराल लालत कोप ज्वाल पर ज्वाल वढं ॥
धरि प्रचंड घन दंड सचंड मंड युद्ध रस क्रुध भयं ।।
भवति हूं ह शार जहं वाहरन लोक लोक भय कुह भयं ॥ २३४॥

दोहा

लोरु लोक भय कूह लहि गहित वज्र वज रंग ॥
यह शक्ति कोनिय पसर पिक्खि गजेन्द्र अभंग॥ १३५॥

मोती दाम छन्द

झुकी सब मैहि इन्द्राक्षि अकेलि। दल पति पै ऐरा वत हिपेलि॥
फिरा वलि वज्र महा वज रंग। हत्यो भुकि दैयत युद्ध अभंग॥ १३६॥
महा वल दैयत सुमेर तूल। लगे तिहि वज्र हि लघु हि फूल ॥
गज तन फूलत जे सर क्रुद्ध। लग्यो अति होन परस्पर युद्ध॥ १३७॥
टूटै जुरि वाननि वान अखंड। झरै तिन ते अति ज्वाल प्रचंड ॥
विलोकि त्रि लोकि पुरी रिपु अत्र। उडै उड गन ज्यों अम्धि नि मत्र॥ १३८
भयो इमि युद्ध महा घन घोर । महा भैभो भव मंडल सोर ॥
गर्जै वल दैयत संगर चाव। लगे नहिं तातन नेक न घाव॥ १३९॥
सोरठा॥ लगैन तातन घाय। इंद्र शक्ति हठि हठि चकित ॥
तव सव शक्ति नि आय घेरयो रिपु चहुं ओरते॥ १४०॥

तोमर छन्द

सब ओरते घिरि राव। कीन्हो जो सवनि भिराव॥
ब्रह्मी हन्यो विधि दंड। वैसवी सुचक्र निखंड॥ १४१
रुद्रिहि त्रिशूलनि छेदि। इंद्री सो वज्र नि भेदि ॥
काली खड्ग वह्नु कीन। कुम्भा शकति उर दीन॥ १४२
वाराहि दंत विदारि। नर हरी पंजनि फारि ॥
शिव दूति फर सन मारि। किय छिन्न छिन्न विदारि॥ १४३
दोहा॥ इमि सव मिल घायल कियो रक्त विन्द मद मत्त ॥
जिमि वरखै घन घोर भरति मि तन वरख हि रक्त॥ १४४

नराच छन्द

जो रक्त विन्द रक्त वुन्द भूमि माहिं सो परयो ॥
तितेक रक्त विन्दु सो अनन्त सून वा रव रयो ॥
समूह वार पार हू रक्त विन्दु पूरियो ॥ ॥

मरै दुनीद पेट ही च पेट मैल चारियो ॥ १४५ ॥
सोरठा॥ जुरी पञ्चरन सपक्ष लोक लोक खल भल परिय॥
रहियन भगन गयह्न दिशि विदिशिन दैयत वढ़े॥१४६

त्रिभंगी छन्द

वढ़े वहु दैयत अति मद मैयत रिसत पतै यत तरु मंडे ॥
पल पल पल गर्वित धरि धरि पर्वितझुकि झुकि सर्वत सर छंडे ॥
देखति इमि शत्रनि समर समर्थनि धरि धरि अत्रनि देव झुकी ।
वाहन रिपु हंकरि सारंग टंकरि करि करि वंकरि देत्य हुंकी॥ १४७॥
करिकरि अति क्रुद्धः विरचि विरुद्धः परसत सुद्धः युद्ध जुरी ।
छंडित वहु बाननि खंडति दाननि दुरद अभाननि हंति सुरी ॥
तीक्षनि सर वर्षति वाकविकर खति हनि रिपु हर्षति रन मुरवी ।
सन मुरवस्न मंडति खंडनि खंडति व्याह विहंडति दुदन रुखी॥१४८
गहि गहि गज गंजिनि रथ पथ भंजिनि वहु रन रंजिनि रन रंगी ।
करि असुर सुमारनि धूम धुमारनि परति भमारनि वहु संगी ॥
वहु श्रोन भभकति सैल्ह धम कति खर्ग चमकति रक्त सनै ॥
रिपु लुथ्थ हि लुथ्थनि गुथ गुथ गुथ्थनि जिमि गज जुथ्थनि सिंहसनै१४९
हनि दानव जूहनि करि करि कूहनि करति फतू हनि चाहु वरं ।
ढह ढह रिपु झुंडहि हलि भुज डंडह उछलत रुंडह श्रोन सरं ॥
श्रोनादिक आगर अमर उजागर मिलि सल सागर सेस वरं ।
बूडे नव खंडहि झिलति ब्रह्मण्डहि महि मंडल दल कौन करं ॥१५०॥
दोहा॥ इमि सब सैनि संघारि रन रक्त विन्द तन वढ़ि ॥
पुनि ज्यौं अकेल्यौ रहि गयो धर धरकत महि मढ़ि॥१५१
वारहजारक संहरे देविनि करि करि कूह ॥
रक्त विन्द के रक्त ते फिरि फिरि जुरत समूह॥ १५२॥

गहीरा छन्द

दुमि मारति रन आरति जिमि मारति अति त्यों वढ्यो।

लल संमर रिपु डंमर डरि अंमर हा हा रहै ॥ ॥ ॥
अर सनहि करि सेनहि नहि चै नहि दै दै सवै ॥ ॥
करि सोचनि हरि लोचनि अरि मोचनि देवी सवै ॥ १५३ ॥

सर्व देवी उवाच

पद्मावती छन्द

मात सुनो यह बात थकी हम सर्व सुरी । ज्यौं हति त्यौं अति वा-
हि दसो दिसि सेन परी ॥ आरत देव पुकारत ही भय भीत सवै ।
श्री भय भंजनि मात हरो भय घोर अवै ॥ १५४ ॥

मरहट्टा छन्द

सुनि विनय निरंजनि श्री भय भंजनि प्रवल सिंह पर चढ़ी ॥
चढ़ी हरि हुंकारि सारंग टंकारि करन युद्ध हूं चढ़ी ॥ ॥
चढ़ी लहि उदित्त मात प्रमुदित्त अनहद नौवत वज्जी ॥
वज्जी सुर दुंदुभि मुदित भ कुंभभि अग्र कालिका गज्जी ॥ १५५ ॥
दोहा ॥ गर्जि सकल शक्तिन सहित लहि रन युद्ध भुकारि ॥
कीन पसर परमेश्वरी वाहन सिंह हुंकारि ॥ १५६ ॥

महानराच छन्द

हुंकार सिंह राज को गरज्जि सिंह वाहिनी सुवाहिनी समेत भूत
प्रेत अस्त्र दै लियो । दयंत श्रोन भागिनी लि जोगिनी सनी न
ची सु युद्ध जानि रुध्र पानि खानि खप्परै लियो ॥ भनै अनन्ध
चाव धन्य श्री जनन्य हू लि कै त्रि शूल कै दले दु छेद गुल्ल तुल्ल
के लियो ॥ दियो हुंकार सिंह घोर वह्नि कै वकत्र सो रकत्त सोर क-
ल विन्दु कालिका अचै लियो ॥ १५७ ॥

विजय छन्द

रक्त सो रक्त विन्दादि दै रक्षसा भक्षि लीन्यो सवै कालिका भोगिनी ॥
शक्ति सैनानि मैं जन्त माता हंसै जै विराजै विजयन्त प्रभा दुर्गनी ॥
देखि श्री देवि को देव जै जै जपै मान दै तां गना जे हुती सोगिनी ॥

श्रोन पीपी छकी रंग भूरा चती नाचती जोगमापाढिगं जोगिनी॥२५८
दोहा॥ रक्त विन्दु इमि युद्ध रन वज्जे अमर सिंघान ॥
सुनत शुम्भ अति कोपि करि दियो निशुंभय पान॥२५९
इति श्री मार्कण्डेय पुराणे सावर्णि के मन्वन्तरे देवी माहात्म्ये रक्त बीज वध ८ अष्टमो ऽध्यायः ॥

दंडक छन्द

निकसे निशुम्भ शुम्भ हुकुम सम्हार रज अमर विमान सजि त्रान तन जरती। रथी अति रथी महारथी समरथ संग संगर अभंग वज रंग रंग भरती॥ है दल औ पैदल गयन्द दल साज सब चलति सकल दल घोरि निसि करती। असुर अनन्य फरन फरक फरक सेस धर कि धर कि धीर धरती न धरती॥ २६०॥ धरकि धरकि धिर धरन धरनि धर करषि कमठ कमलि नि दल चचकति डगत नगर डगम गत जगत गिरि भगत नगन मय सूर सब वचकति॥ असुर अमर अक वक सक पक परिधक पक विधि सेसु वधु मनु वचकति। चलित जु प्रवल निशुम्भ सु पृथुल दल जल थल विकल सकल महिम चकति॥ २६१॥
दोहा॥ धावत प्रवल निशुंभ के वज्जत नवल निशान॥
महि मचकति लचकति अचल विचल अमर शशिभान॥

रेखता॥

निशान दै आव निशुम्भ चतुरंग दल लियो सब संग रन नजरंग गहिल्ली। हुं करत संक देवं कडंकानि दै सुनि संकानि सक्रादि सुर देह ढिल्ली॥ सो गौरि गुण गौरि सिर मौर कछु कोप करि अरु ओप करि चक्र चालि ज्यौं चक्र चिल्ली॥ महा सत्र गजराज गन जानि गल्ल गाल्ल मृगराज संमाज संफौज पिल्ली॥ २६३॥
दोहा॥ पिल्लीं सकल भ्रांके इतहि उतहि प्रवल रिपु क्रुद्ध।

हंकि हंकि संकट विकट उभै उभै जुर युद्ध ॥१९६४

त्रिभंगी छंद

जुरि युद्ध नि जोधा जुद्ध प्रबोधा करि करि क्रो धारन ठाढ़े ।
हथ्थिनि सों हथ्थिनि रथ्थिनि रथ्थिनि समर समथ्थि निमन वाढ़े
है दल सों है दल पैदल पैदल इहिविधि है दल कोप पुरे ॥ ॥
जापर जो अव छत कित कितना वध सावधान जुरि युद्ध जुरे ॥१९५

भुजङ्ग प्रयात छन्द

जुरे जुद्ध जोधा दुहूं ओर जोरं । ह हंकारि हंकारि कै क्रुद्ध घोरं ॥
तजे अस्त्र पै अस्त्र ठा तन्न वोडे । तकै दांव पै दांव आवद्ध छोडै ॥१९६॥
जुटे वान सों वान ज्वाला भरे हैं । टुटे वान पै वान भूपै परे हैं ॥
चले चक्र पै चक्र प्राकादि कंपै । झरै खड्ग सों खड्ग ज्वाला वितंपै ॥१९७॥
कहूं सेल्ह पै सेल्ह मेलै चमंकै । कहूं शूल पै शूल झूलै धमंकै ॥
कहूं वज्र सों वज्र वज्जैं करालं । कहूं गुर्ज सों गुर्ज वर्षन्त ज्वालं ॥१९८
कहूं शस्त्र पै शस्त्र श्री देवि छंडै । घने शास्त्र पै शास्त्र दै भार भंडै ॥
कहूं ब्रह्मनी ब्रह्म दंडै प्रहारे । महा घोर दानो अमानेन मारे ॥१९९॥
कहूं वैस्नवी चक्र सों सैन छंटै । हूवै जु द्ध भारी मचे वोद्ध टंटै ॥
कहूं रुद्रनी शूल शूलै धमंकै । महा घोर दानो हृदै में चमंकै ॥१७०॥
कहूं इन्द्रनी वज्र सों शत्रु चूरै । कहूं वान वाना वली युद्ध पूरै ॥ ॥
कहूं कुर्म शक्ति हथ्थिनि विदारै । कहूं अंकु सं मारिकै मुंड फारै ॥१७१॥
कहूं वाराही दन्त ही दैत्य दाहै । कहूं मारि ठं काठ कै सैन ढाहै ॥
कहूं नार सिंही महा पुंज भंजे । कहूं गर्जि ही गर्जि गज राज गंजे ॥१७२॥
कहूं चंडिका रथ्थ सों रथ्थ मारै । कहूं हथ्थिया हथ्थिया सों पछारै ॥
कहूं कालिका जुत्थ के जुत्थ भक्षै । कहूं सा सहै सैन आकाश गक्षै ॥१७३
कहूं अर्जिका भिंड हो भिंडि मारे । कहूं चर्न हीं चर्न के चूर डारे ॥
कहूं वारुनी दारुनी वार वाहै । कहूं ज्वालिनी ज्वाल माला निदाहै ॥१७४
कहूं खेचरी भूचरी मारि दैनी । कहूं यक्षनी रक्षनी भक्षि लैनी ॥

कहूं जोगिनी भोगिनी स्रोन संन्यै। कहूं संखनी डंकनी फूल मन्यै॥ १७५
कहूं प्रेत फूलै रुधिर नीर न्हाही। कहूं भूत भैरो लिये लुथ्थ जाही॥
कहूं लुत्थ पै लुत्थ देयंत लुहै। कहूं रंगना सूरमा लुत्थ टुहै॥ १७६॥
कहूं मुंड कहूं डरे भूमि भारे। कहूं रुंड घूमै मनो मत्त वारे॥
कहूं मुंड विनु रुंड लै स्वर्ग धावै। कहूं स्रोन लै पित्र पिंडा भरावै॥ १७७॥
कहूं धाइ लै घोर चिंकार स्वंकै। कहूं धाय भाटौं नदी से भभंकै॥
कहूं मात मातंग स्रभंग लुट्टै। कहूं त्रुंगिया पत्र से रथ्थ टुट्टै॥ १७८॥
कहूं गिद्ध उड्डै भखै स्रोन मासं। कहूं सिद्धि वैठे सु देखैं तमासं॥
भयो युद्ध यों भूत भव्यै अनन्यं। विजै ईश्वरी कासु भाखै अनन्यं॥ १७९

पद्धकुल छन्द

जपहिं अनन्य संगर जननी के। दानौ भुंड रुंड विन ही के॥
कीन मात सुर मन मन ही के। दानौ भाग गये रन ही के॥ १८०॥

महा नराच छन्द

कियत्ति रुंड मुंड भुंड दानवा विखंडिकै अखंड सत्र मारि वा-
रि पारि सिद्ध सालिका॥ कपंति चन्द्र भानयन जात कौतिकीन
के अकूत भूत प्रेत भू अभूत युद्ध जालिका॥ भनै अनन्य चा-
व धन्य संग सिंह घोर ता प्रजो रता सो अन्य धन्य धन्य विश्व पा-
लिका॥ समस्त सत्र गंजि अस्त्र शस्त्र पोछिन कमे अनेक ल-
छि लुथ्थि भछि लीन व्यय कालिका॥ १८१॥

पद्धरी छन्द

कालिको सकल भक्षे ददन्त। देखत निसुंभ अति रोस चित्त॥
अति गर्व गर्जि विक्राल घोर। दस सहस वाहु धरि सस्त्र जोर॥ १८२
दस दिसिनि सस्त्र पूरे अखंड। खल भलिय विश्व भेते ब्रह्मंड॥
तव सब दोविनि हूकै विमान। घाले निसुंभ कहं चंडि वान॥ १८३॥
अति वान महा गिरि वज्र तूल। लागो निसुंभ उर कूद फूल॥
काट्यौ न कटै अति विकट अंग। टाल्यो न टरै संगर अभंग॥ १८४॥

मार्यौ न मरै जनु अमर काय। जार्यौ न जरै बज्जकुंराराय ॥
हठि ही हठि घकि प्रान्हं समस्त। परवत प्रमान ठाढो प्रमस्त॥२८५
गल गर्जि सकल शक्ति नि सभाय। ईश्वरि सन मुख धायो रिसाय॥
कर खरग काढि रिस वंढि रास। दीन्यौ सुखर्ग झुकि सिंह शीस॥२८६
तव सिंहासन अम्वास मध्थ। लिय वोहि खर्ग वहु आपु सध्थ॥
अप खर्ग काढि रिप दावडाटि। कुक खर्ग असुर भंजासो काटि॥२८७
पुनि असुर कोपि तिरशूल लीन। श्री मात तुरत तिर टूक कीन ॥
पुनि असुर सांगली नी प्रचंड। श्री मात तुरत किय खंड खंड॥२८८॥
पुनि असुर वज्र घाल्यो सुरंत। श्री मात नस कितो त्यौ तुरंत ॥
तव असुर रोस रिसियाइ गर्व। दश सहस वाहु सजि सस्त्र सर्व॥२८९
तवै मात सस्त्र खंडे समस्त। दश सहस बाहु काटे समस्त ॥
तदपि समथ्थ मानीन हारि। धायो सन्मुख मुख वक्र फारि॥ २९०॥
तव भुकि ब्रह्मी सिर दंड दीन। विस्नी हनि चक्रनि खंड कीन॥
रुद्रं त्रिशूल तीक्षन विदारि। इंद्री वज्र नि वज्र रंग मारि॥ २९१॥
काली खर्ग नि किय खंड खंड। चंड्रिका शक्ति झाकि नि विहंड॥
वाराहि हृदय दंतनि विदारि। नरहरी उदर पंज नि निफारि॥२९२॥
के हरी न खनि नख सिख विहंडि। शिव दूति पिये श्रोनित अखंडि॥
भैरवी चर्न धरि रन कठोरि। संखिनि डंकिनि भुज लीन तोरि॥२९३॥
जोगिनि प्रेतिनि मिलि ठौर ठौर। भख्यौ राक्षस करि कौर कौर॥
यह सुरन देख रास सुक हाला आनंद ही वरषे पुहुप डाल॥२९४

दोहा॥ कौर कौर जोगिनि करो प्रवल निशुम्भ नरेश ॥
　　सुनत शुम्भ रिस परजर्यो अति दुख परम कलेश॥२९५॥

इति श्री मार्कण्डेय पुराणे सावर्णि के मन्वन्तरे देवी माहात्म्ये निशुम्भ वध नवमोऽध्यायः॥

तोटक छन्द

सुन शुम्भ चलो तो कलेश किये। दल की वल कौन सखा रहिये॥

अति आतुर क्रुद्ध उछाह कर नव मन देविनि देवन को निदरै ॥ १९६ ॥
असिढाल लिये कढ़ि क्रुद्ध बढ्यो। जनु कोपि प्रलै कहु कालु चढ्यो॥
द्विग राज कहे सब नगु कढ्यो। रवसी अरु राकस पुञ्ज बढ्यो॥ १९७॥
चल कूह करत हनो घन से। एक सूर सबै एक ही मन से ॥
सबहूं क त कूकति धावत हैं। कर परबत वृक्षफिरावत हैं॥ १९८ ॥
घन घोर महा असु गर्जति हैं। भुज ठोकि महा बल सर्जति हैं ॥
सब धावत धाय धराध चके। नव खंड ब्रह्मण्ड सबै लचिके॥ १९९॥
गिरि मेरु हले सब लोक कंपै। विधि विष्णु सुरेश्वर त्राहि जपै॥ ॥
दशहूं दिशि कम्पु भयो धरनी। नहिं दानव सैन परै बरनी॥ २००॥
खुर धार नि ढार अकाश चढी। छपि भानु प्रभा रजु रैनु मढी ॥
पंच भूत कपंत अकूत भये। गजि जोरन आतुर आप गये॥ २०१॥

कुंडलिया छंद

आतुर द्विग आयो नृपति रन्न भूमि जुरि जूह॥
जूह कुरम जूझो निरखि बाढो सोक समूह ॥
बाढो सोक समूह दुरव रुदनु रिसा बव ॥
साबव भ्रम ही भीत न्हती रिपु देखि रिसावव।
देखि रिसावव शुंभ समर गर जतु गन मातुर।
मातु रसन सुख धाय पुलि न आयो अति आतुर॥ २०२

सवैया

आतुर शुम्भ गयो रन में जहं ठाहि भवानि गुमान गरूरी
मूरति वंत निरं जनि जोति दिये दृग अंजन रेख सिंदूरी ॥
सर्ब सिंगार विभूषित भूषन अस्त्र धरे कर संगर सूरी ॥
मैणुय किशोर महा सुकमार प्रताप वली मन भावनि पूरी॥ २०३

दोहा॥ परम प्रताप स्वरूप लहि रह्यो शुम्भ चक चाय ॥
अहं कार के कोप तें कहे वचन रिसियाय॥ २०४॥

शुम्भ उवाच

गीति का छन्द

तू कहति जो मम युद्ध जीतै हि तेहि वरहु वर धारि ।
इन सकल देविनि वल स्मरति तो मै कहा वल नारि ॥
तव जानि हौं जव आपु वल संग्राम मो सह साजु ।
परवल स्वयम्बर कव कह्यो करु स्वयं संगर आजु ॥२०५

दोधक छन्द

वात इती सुनिकै जग वंदिनि । दानहु ज्यो सुदियो सुरनंदिनि ॥
हौं अकेलि दुतिया जनि जानहि । सव मम अंस प्रमानै मानहि ॥२०६॥

मुचकुन्द छन्द

यों कहि आदि शक्ति जननी सव शक्ति वदन समाइ लही ।
ज्यौं लहरै उठि मिलै सिंधु तें तिहि तिहि मिल भई लही ॥
यों सव देवि समाय आप महं मात सु आपुहि आपु रही ।
आपु प्रभाव जनाइ प्रभावति पति नृपति सों वात कही ॥२०७॥

ईश्वरी उवाच

दंडक छन्द

मैं हौं जोग माया मेरी माया को विलास विश्व माया ही तै मोहे मूढ़ जान तन ऐक मैं । मोही तै पसारो सवु मोही मैं पसारो देखि मोही मैं समै हैं जलम करी विवेक मैं ॥ आदि शक्ति मोही मध्य मो ही अन्त मोही शक्ति अक्षर अनन्य अन्य मिथ्या भेम भेक मैं । केवल मैं एक एक जानत अनेकनि मैं एक तें अनेक एक शक्ति हौं अनेक मैं ॥

दोहा॥ जदपि आपु सम भाव हीं तदपि न सम भ्यो नीच ॥
गर्जि अस्त्र छंडन लग्यो सो है मूढ़ की मीच ॥२०८॥

छप्पै ॥

गर्जि दुष्ट वल पुष्ट अस्त्र सस्त्रनि वहु छंडति ।
जिमी घेरि गिरि मेरु मेरु मंडल भरि मंडति ॥

पुरिय वान असमान वान विन है रन सुझति ।
उलटि उलटि लै अस्त्र सत्र अपु ही आपु जुझति ॥
कहि अक्षर भवति आकुल भव भवन भूत अद्भुत समर
सुरवर विरंचि वांछित कुशल त्राहि त्राहि जंपति अमर ॥ २२०॥
दोहा॥ त्राहि त्राहि त्रिभवन मच्यो भई महा रन कूह ॥
घोर युद्ध दारुन मच्यो सत्रुह जूही जूह ॥ २२१॥

दंडक छन्द

देखि सत्रु जूह अन्न जूह कूह लोकनिमि हू हके फतूह कौ सत्ता-रि रिपु गंजिनी। साधि धनु वान चन्द्र वान अरि प्रान लैन भृकु-टी कमान सी चढाय श्री निरंजिनी ॥ अक्षर अनन्य कोपि अ-ग्नितै प्रचंड अंग अंग प्रज्वलित ज्वाल माल तिन कंजिनी । कै के सिंह नाद सिंह पेलति रिसानी रोस गर्जि घोर वानी श्री भवा-नी भय भंजिनी ॥ २२२॥

अमर गीतिका छन्द

भय भंजिनि गर्जी रन मैं। कीन पसर रिपु दल मैं॥
कोप कृपा युत मन मैं। पेलि सिंह अति वल मैं॥ २२३॥
दोहा॥ कीन पसर अरि झुंड पर ज्यौं पक्षिन मैं वाज ॥
ब्रह्मादिक कौतिक थकित श्री भगवति रन साज॥ २२४

अमृत ध्वनि छन्द

श्री भगवति अति कोपि करि धनुष वान धरि हस्थ ॥ ॥
प्रवल शुंभ दल वल मलति चलत चपल गति रस्थ॥
रस्थहि चलति रस्थ हि धनु सुर कत्थहि करन करस्थहि॥
तहं पथ रत्थहि वैरि विरत्थहि मत्थहि हतति समत्थहि॥
असु वर भत्थहि भरत अरत्थहि अरधिति रत्थहि गुभगाली॥
चरितु अरत्थहि अक्षर कहत्थहि धनुष धरत श्री भगवती॥ २२५

कमला छन्द

धनु हाथ सो क्रुद्ध धरे। समरत्थ हि सर स्वर का।
उल असन खर्व्वन रथ्य बलगर्वन सुसेस धराधर की॥
कहि अद्भुत अन जिते इतले सो लिते तिया कर की।
हरखयं भुआन्द्रंभ करे यहि कलव अन करकी॥२२६

सवैया॥

कर्षति पासि नि पासि महासुर भक्खति स्वर्गनि सो रिस दुर्गा।
बरखति बान घने घन सज्जनि तर्खति ज्यों सकु निघ्यति उर्गा॥
हु धंति जोनि दिजै कहि अद्भुत अच्छर देवन चलहि जो सुर्गा।
ज्यों अति अद्भुत युद्ध करिय रिपु दारुन दुर्ग विदारन दुर्गा॥२२७॥

दोहा॥ श्री दुर्गा रिपु दुर्ग हति कल संगर भक रुराड॥
खंड खंड खंडे असुर जिल लित दर कल मुंड॥२२८॥

महानराच छन्द

डरे अखंड रुंड मुंड भुंड दीह दानवा प्रतुंड श्रोन कुंड बूड खंड खंड देहरी। जहां तहां निहारि भूरि पूरि श्रोन मास ही तना तहीं च कित्त भूत प्रेत देन ही हरी॥ भने अनन्य धन्नि धन्नि युद्ध श्रीज नन्य के न अन्य भूत भव्य वत्य मान जानिये हरी। अकेलि के लि ही दले समस्त दैयता जथा अनंत दंति पंति हंति सक केह री॥२२९॥ हरं भयान श्री भवानि भूरि भारि हारि कै सुमारि भारि सत्र अस्त्र सस्त्र हस्त मेलि मे। उहे कमंड क्रुद्ध युद्ध युद्ध कौत्र सुद्ध भो महासनद्ध बद्ध बद्ध बुद्धि नाप छेलि मे॥ भने अ नन्य जोर जंग मात संग मंडिनी प्रचंड दानवा अखंड खंड खर्ग खेलि मैं। समूह हूह केर हेल झैन हेकि हैं कहूं रहे खद वहे ति श्रोन सिंह की दलेलि मैं॥२३०॥ बहेलि श्रोन सिंह की ज्यों सिंह की दपेट बाल घट्ट के अघट्ट के सो सर्व सत्र छाहिनी। हल कथ ढाल क ध्य मध्य खर्ग गाह गेलु जा भुजा भुजंग अंग लानि हाडुलाव गाहिनी॥ भने अनन्य अन्य अंग भंग जन

जंत्र ज्ञानि मंत्र अत्र ज्वाल जाग पन्हरा रिन्हाहिनी। तहां महा समुद्र मै विमुद्र रूप राज सी जहां जसी विराज मान मात सिंह वाहिनी॥ २२१॥

नाग स्वरूपी छन्द

प्रचंड सिंह वाहिनी। समस्त सत्र दाहिनी॥
विलोक सुंभ क्रुद्ध कै। झुक्यो विरवाद वुद्ध कै।२२२॥
अनन्त अत्र मुक्किये। सुदिरव्य मात झुक्किये॥
समस्त अत्र खंडियो। अभूत युद्ध मंडियो॥ २२३॥
कियेति क्रुद्ध चढ्ढियो। समान युद्ध वढ्ढियो॥
परस्स सर्र छंडही। सुत्रान ज्ञान खंडही॥ २२४॥
जुटंत अस्त्र अस्त्र सों। छुटंत सस्त्र सस्त्र सो॥
तकं तदा वदा वही। झुकंत युद्ध चाव ही॥ २२५॥
करंतहं कहं तहे। धरंत धी निशं कहे॥
लरंत अंत रिक्षनं। करंत चाम तीक्षनं॥ २२६॥
चलंत मूल सल्हकं। दलंत दाव हूल कं॥
चलंत जोर चत्र हैं। गजंत घोर वत्र हैं॥२२७॥
उठंत चक्र ज्वालकं। छुटंत तीर भालकं॥
लगंत तीर पर्वतं। भगंत देव सर्व तं॥ २२८॥
भिदंत व्योम वान हैं। छिदंत हेल वान हैं॥
अनंत युद्ध विन्न हैं। इतै उतै न जिन्न हैं॥ २२९॥
विलोकि लोक कंपही। सुत्राहि त्राहि जंप ही॥
त्रिदेव सोक मंड ही। उसास सास छंड ही॥ २३०॥

दंडक छन्द

त्राहि त्राहि जप तत्र देवता विलोक सोक लोक लोक भागि वडे गिरिनि गिरत हैं। श्रोन के समुद्र मैं समुद्र सातों झिलि रहे पर्वत से दिप वाद झिर्ना से झिरत हैं॥ डड से बहुत रुंड

मुंड भुंड जहां तहां देखत चकित भूत भोगत फिरत हैं। अक्ष-र अनन्य अंतरिक्ष लक्ष जो जन पै अंवा अरु शुंभ काल मी-चु से लरत हैं॥ २३१॥

दोहा॥ दश हजार जो जन चढो धरनी ऊपर आन॥
कहू अनन्य संग्राम को वर्नन करिये कौन॥ २३२॥
वर्ग झुका संग्राम गति त्रिभुवन भवत अचल्ल॥
देखत दुमि अम्बा चरित चकित हरी हर ब्रह्म॥ २३३॥
फिर चक्रत सम उभय रथ अन्तरिक्ष रिस मण्ड॥
करत युद्ध हंकरत मुख भरत अत्र अति चण्ड॥ २३४
इहि विधि विविधि प्रकारि करि समर परस्पर वाढ॥
काल मचु मानहु लरत उभय महा रिस वाढ॥ २३५

मरहट्टा छन्द

वाढे रिस युद्ध हि विवि वल वुद्ध हि क्रुद्ध सस्त्र चलंत॥
धरनी असमानहि पूरि यत्रा नहि भानहि विरथ वलंत॥
देवा अति आरति दीन पुकारति मारति क्यों नहिं मातु॥
लीला रन खेलति दहिने देखति देखति खल कन सातु॥ २३६॥

छप्पै॥

सुनि सुनि अमर पुकार समर कोपित भै भंजिनि।
टंकरि करि सारंग रंग रन भुव रन गंजिनि॥
अर्ध चन्द्र पर वान वान अरि प्रान हरनि धरि।
तान कान पर जन्त कुटिल भृकुटी मरोरि करि॥
कहि अक्षर अनन्य सुदृष्टि मिलि तजि सासे करि सर भरेव
नृप शुंभ प्रचंड अखंड तन सुखंड खंड खंडन करेव॥ २३७॥

छप्पै॥

जयति सिंह असवार जयति संगर भुज पंकर।
जयति ब्रह्म धनु धार जयति सुरलभ धुव संकर।

जयति महा अभुतार जयति मधुकर भैखंडन।
जयति चंड औ मुंड जयति धुम्राक्ष विहंडन ।
जैजयति रक्त औ विन्दु जो शुंभ निशुंभ समरे भनन।
सुरसंकट हरन अनन्य भनि जयतिजपत समरक्ष जनन॥२३८॥

विजै अपरी छंद

जयति जयति प्रमुदित सकल सुर जननि पई कृत विनय उमगि वर॥ सहि प्रम भरि गिरि नयन पुरि। करत चारु अस्तुति अजुली जुरि॥ २३९॥

इति श्री मार्कण्डेय पुराणे सावर्णि के मन्वन्तरे देवी माहात्म्य शुम्भ वध १० दशमो ऽध्यायः॥

अथ नारायणी देवी की स्तुति लिख्यते

दोहा॥ नमो नमो श्री भगवती अद्भुत चरित अनूप॥
सुर उबारि गंजे असुर धरि बहु दिव्य स्वरूप॥२४०

विजया छन्द

दिव्य मानिक्य को क्रीट माथे लसे दिव्य आभर्ण आभांति भायनी। दिव्य स्वेतां वरं सुंदरं गजितं छाजितं दिव्य ही रानि हारायनी॥ दिव्य आवाई श्री दिव्य सिंहासनी शुंभ निशुंभ संहार कारायनी। दिव्य औतार संसार भै तारनी सो नमो हो नमो मात नारायनी॥२४१
संख चक्रं सारंग त्रैशूल सैल्ह प्रदक्षिनी दीक्ष सो प्रानधारायनी। चापपासांकुसं ढाल घंटा तथा वा महाथे महा सोभकारायनी॥ पुंजि दश सहस भय भूरि भुज भंजनी रंजनी देवता दैत्य दारायनी। अम्बिका रूप श्री संभु शक्ती स्वयं सो नमो हो नमो मात नारायनी॥२४२
गात राते प्रभा पाट राते धरे सर्व राते नगा भर्न धारायनी॥ ॥
दण्ड का मंण्डलं मण्डितं पानि में चारि वक्रं श्रुतिं चारि चारायनी॥
राजसी राज हंसे सपे आसन वासनी दास की आसपारायनी ।

ब्राह्मनी, रूप ब्रह्मादि कर्त्ता स्वयं सो नमो हो नमो मात नारायनी॥२४३
शङ्ख चक्र गदा पद्म सारङ्गिनी सावला निर्मला भेष धारायनी॥
चारि बाँहे धरे वैजयंती गरे वस्त्र पीतां वरं दास तारायनी ॥
शक्ति शार्ङ्गी स श्री गरुड़ सिंहासनी सुर मधु कैट भै दुष्ट दारायनी।
वैस्नवी रूप विश्वादि माता स्वयं सो नमो हो नमो मात नारायनी॥२४४
शीस सुंदर जटा गङ्ग धारा लसे चन्द्रमा भाल त्रै नेत्र तारायनी ॥
सिंह चर्मै धरे मुंड माला गरे तेज पुंजे प्रभा सर्व हारायनी ॥
शूल डमरू लिये काल कूटे पियेगा तवी भूत नंदीह कारायनी।
रुद्रिनी रूप रुद्रादि जोगेश्वरी सो नमो हो नमो मात नारायनी॥२४५
सर्व सोने मनै भूषनो भूषिता वस्त्र नोने सुने नेह जारायनी ।
पानि वज्रै धरे मुक्त माला गरे माधुरी मूर्त्ति सो भास धारायनी॥
मात मातंग सेत पती वाहिनी दाहिनी देवता दैत्य दारायनी ।
इन्द्रनी रूप इन्द्रादि राजेश्वरी सो नमो हो नमो मात नारायनी॥२४६॥
मोर कीरीट दिये मोर पीठा सनी मोर ग्रीवां तनै सोभ कारायिनी ।
चक्र शक्ती धरे वनै माला गरे वस्त्र पीरे परे पीर दारायनी ॥
सिद्ध साध्यार्चिता चर्चिता चंदनी वंदनी विश्व विश्वेश पारायनी।
नंददा रूप आनंददा सर्वदा सो नमो हो नमो मात नारायनी॥२४७॥
चंद्र वक्त्रं तथा आई चंद्रं सिरं चंद्र वर्नं त नंदीति धारायनी ।
अंबरं उज्वलं प्रज्वलं दुष्ट वा आवदा सावदा नेह भारायनी॥
शक्ति को दंड मंड करि दानवा दंड ब्रह्मांड पारायनी । ।
कालिका रूप को मारि शक्ति प्रभा सो नमो हो नमो मात नारायनी॥२४८
शीस आकाश लों चरन पाताल उन घोर वक्री महा घोर धारायनी
रोम दै ने खरे नैन ज्वाला भरे भीम भैसा सनी भीम कारायनी॥
शेष के शीश से थम्भ उखारि के डाढ के अग्र पर भूमि धारायनी
वाराही रूप वाराह कर दायका सो नमो हो नमो मात नारायनी॥२४९॥
आई नरदेह धरि के हरी आई हो उई के शीस सांकुड़ कारायनी।

वक्र पंजा वने नैन ह्वं चट चटे कट कटे दंत मय मंत नारायनी ॥
खंभ उर दारि करि दानवां हिर्ने कश्यप को पेट फारायनी ।
नार सिंही नृसिंह स्वरूप करि सो नमो हो नमो मात नारायनी॥ २५०
कंठि सुम्मे स्वरी वैठि उर्बु महा हास अट्टं टहं कार कारायनी ।
मुंड रुंडा वली तुंड श्रोने श्रवे श्रोन बूडे गज चर्म धारायनी॥
मुख्य मारवं महा भैरवी भ्यानुकं भूत चढ भयंकर भेष कारायनी।
कालिका रूप है राक्षसं भक्षिनी सो नमो हो नमो मात नारायनी॥ २५१
देवता श्रोनता पंक अंक चिंता चर्चिता गात संघात धारायनी ।
दल्ल कानि चक्रानि सत्र प्रहारनी अत्र स्वर्गादि दुर्गादि दारायनी॥
गर्व ते गर्वती चर्वती दानवा प्रवती प्राय ज्ञाय प्रेय कारायनी।
चंडिका रूप वंकार हुंकारिनी सो नमो हो नमो मात नारायनी ॥ २५२॥
धूमरे से जटा जूट छूटे सिरं कर्न मुद्रे तने भस्म धारायनी ।।
तेज भौंहें चढी लाल चच्छे प्रभा माल रुद्राक्ष भद्राक्ष धारायनी॥
कटि श्रोरां वरं पट्ट हैं गेरु खे ख पर पानि श्रोन प्रेय हारायनी ।
दूतिका रूप संग्राम रग प्रिये सो नमो हो नमो मात नारायनी ॥ २५३॥
वक्र विक्राल भज्वाल ज्वाला ननं दै ननै सैन संतुस्ट जारायनी।
नाशिका स्वास छोड़े हि फौजे उड़े मत्त हाथी न हाथान ठारायनी॥
फेरि त्रैशूल त्रैशूल ह्वै कारनी धारनी जे विजे विश्व पारायनी।
भई कालिका कला काल भै भंजनी सो नमो हो नमो मात नारायनी॥ २५४
एकंत आपु सर्वं अनेक कै के शुंभ निशुंभ संहार कारायनी ।।
फेरि के नेक ते एक ही है स्वरी एक है नेक की बुद्धि पारायनी ॥
तो कथा जो जथा सो तथा को कहै यों अनंनै भनै श्रोत भारायनी।
अक्षरं अनन्य अद्वैत सत्री प्रभो सो नमो हो नमो मात नारायनी॥ २५५
आपु हीं आप अद्वैत प्रभावती आपु हीं आप दुतीय कारायनी ।
आपु हीं सुनी निर्गुनी निर्भी सिनी भासिनी आपु हीं ज्योति जारायनी
आपु हीं आदि अनादि सर्बादि है सर्व कारन सर्व प्रेय कारायनी ।

जन्न बीजंति श्री जन्न माता स्वयं सो नमो हो नमो मात नारायनी॥२५६
हस्त हीनं विधि कोटि कर्त्ता सदा चक्षु हीनं हरिं कोटि पारायनी॥
श्रव हीनं हरे कोटि संघारि करि चर्न हीनं सोद कोटि चारायनी॥
वाक हीनं धनं कोटि वानी धुनी गात हीनं धरं कोटि धारायनी।
रूप हीनं तनं कोटि रूपं करी सो नमो हो नमो मात नारायनी॥२५७॥
रूप रेखे नहीं रूप रेखै मही रूप रेखे सुकी धीव धारायनी।
दृष्टि आवै नहीं दृष्टि आवै तुही दृष्टि आदृष्टि त्रैलोकपारायनी॥
नित्यं निर्वर्त्तिपरवर्ति कारायनी निर्गुनी सर्गुणी भेष धारायनी।
अक्षरं अनन्य अद्वैत शक्ति प्रभु सो नमो हो नमो मात नारायनी॥२५८
सर्व रूपी निमे रूप संगा तुही सर्व ज्ञानी नमो ज्ञान धारायनी।
सर्व जोती नमो जोति आभा तुही सर्व शक्ती नमो शक्ति कारायनी॥
सर्व संसार में सार भूतिक तुही अक्षरं अनन्य सो सर्व कारायनी।
सर्व व्यापी चितं नित्त ही सर्वदा सो नमो हो नमो मात नारायनी॥२५९
सर्व शास्त्र चितं नित्त ही सर्वदा सर्वदा नद्यं देव तारायनी॥
सर्व सिद्धीन मै अश्चर्य्यदा सर्वदा सर्वदा सर्व उद्योतकारायनी
सर्वदा सो प्रकासं प्रभावंदि तां वेद वेदांत सिद्धांत सारायनी।
सर्व कर्त्तार श्री सर्व शक्ती स्वयं सो नमो हो नमो मात नारायनी॥२६०
सर्व सो पानि पादानि प्रभा सर्व तो चक्षु कर्त्तादि कारायनी।
सर्व तो गर्भ संसार गर्भै धरे सर्व तो दृष्टि सो दृष्टि धारायनी॥
सर्व तो नंत आद्यंत मध्यं विना पूरना सर्व तो पार पारायनी।
सर्व विश्वेश्वरी विश्व रूपे धरे सो नमो हो नमो मात नारायनी॥२६१
इति श्री मार्कण्डेय पुराणे सावर्णि के मन्वन्तरे देवी माहात्म्ये नारायणी देवी स्तोत्र समाप्तः ११ ग्यारवां अध्यायः॥

दोहा॥ विश्व रूप विश्वेश्वरी विश्व जननि परवान॥
सकल विश्व कारन करन तेरी शक्ति निदान॥२६२

रेखता ।

तेरी ये शक्ति उत्पत्ति संसार सब तेरी ये शक्ति प्रति पालि गाता ॥
तेरी ये शक्ति विस्थार अस्थित हुनी तेरी ये शक्ति संघार धाता ॥
तेरी ये शक्ति फल दंड पावें सवे तेरी ये शक्ति अनु कर्म्म धाता ॥
तेरी ये शक्ति शिव शक्ति आनन्य भनि जयति शिव शक्ति श्री जक्ति माता ॥ २६३
तेरी ये शक्ति भुव धरे चर अचर सब तेरी ये शक्ति जल सिंध साता ॥
तेरी ये शक्ति जग तेज व्यापी कहैं तेरी ये शक्ति जग बहति वाता ॥
तेरी ये शक्ति आकाश ध्वुनि शब्द है तेरी ये शक्ति सब तत्व धाता ॥
तेरी ये शक्ति शिव शक्ति आनन्य भन जयति शिव शक्ति श्री जक्ति माता ॥ २६४
तेरी ये शक्ति निर्गुन्न निर्वान पद तेरी ये शक्ति सर्गुन्न गाता ॥ ॥
तेरी ये शक्ति विधि विस्न ऐश्वर्य्य पद तेरी ये शक्ति महेश धाता ॥
तेरी ये शक्ति रवि चन्द्र उद्योत कर तेरी ये शक्ति जल मेघ पाता ॥
तेरी ये शक्ति शिव शक्ति आनन्य भनि जयति शिव शक्ति श्री जक्ति माता ॥ २६५
तेरी ये शक्ति स्वर अमर अमरावती तेरी ये शक्ति मुनि ज्ञान ज्ञाता ॥
तेरी ये शक्ति दयंत वर जोर अति तेरी ये शक्ति गन रुद्र राता ॥ ॥
तेरी ये शक्ति सब सिद्धि सिद्धांत पद तेरी ये शक्ति अष्टसिद्धि दाता ॥
तेरी ये शक्ति शिव शक्ति आनन्य भनि जयति शिव शक्ति श्री जक्ति माता ॥ २६६
तेरी ये शक्ति तेजीनि मैं तेज है तेरी ये शक्ति दल बलनि गाता ॥
तेरी ये शक्ति ज्ञानीन मैं ज्ञानु है तेरी ये शक्ति ध्यानीन ध्याता ॥
तेरी ये शक्ति योगीन मैं योग है तेरी ये शक्ति तप तेज जाता ॥
तेरी ये शक्ति शिव शक्ति आनन्य भनि जयति शिव शक्ति श्री जक्ति माता ॥ २६७
तेरी ये शक्ति चेतन्य संसार सब तेरी ये शक्ति जड़ मूल गाता ॥ ॥
तेरी ये शक्ति मद्दि तेज बंधन भवै तेरी ये शक्ति म मोहि ज्ञाता ॥
तेरी ये शक्ति भूत प्रेत भै पाव ही तेरी ये शक्ति निजु भक्ति जाता ॥
तेरी ये शक्ति शिव शक्ति आनन्य भनि जयति शिव शक्ति श्री जक्ति माता ॥ २६८

छप्पै ॥

जननि मात जग जोति जक्ति मूरति जग बंधनि ॥
शिव निवास शिव शक्ति शिवहि शिवदा शिव चंदनि
निर्विकार निरधार नित्य निर्वान निरंजनि ॥ ॥
भव अधार भव सार प्रभै करता भै भंजनि ॥ ॥
सवानि सर्व लायक सकल सर्व लोक कारन करन ॥
समरथ जननि अनन्य भनि सो जयति मात असरन सरन ॥

दोहा ॥ इमि देवन अस्तुत करी पूरन प्रेम प्रमान ॥ ॥
ह्वै प्रसन्न भनि ईश्वरी मागहु सुर बरदान ॥ २७० ॥

गीतका छंद

सुनि सुर फूलि प्रनाम करि कीन्ह अर्ज कर जोरि ॥
तुव कृपा ते हम देव पद लहि सुख विभुक्ति न थोरि ॥
ताते सो यह वर दान मांगत सुनि जननि जग माय ॥
जब जब सु इमि संकट परे तब तब सो होहु सहाय ॥ २७१ ॥

सोरठा ॥ सुनि सुर विनये पीर श्री भवानि भय भंजनी ॥
मधुर वचन गंभीर कहा आप परमेश्वरी ॥ २७२

पद्धरी छन्द

संकट काटौ तुह्मरे समस्त ॥ जब जब बाढै दैयत प्रमस्त ॥
अट्ठाइसे कलि युग सु ठौर ॥ ह्वै है नृप शुंभनि शुंभ और ॥ २७३
तब हीं कल्यानी रूप धारि ॥ हनि हौं सो दुष्ट सो बिनि संघारि ॥
पुनि भीमासुर ह्वै है प्रचंड ॥ युग जीति राज राजहि अखंड ॥ २७४
तब ह्वै सताक्षि औतार धारि ॥ हनि हों सो दुष्ट खर्गनि प्रहारि ॥
पुनि भीम नाम ह्वै है दयंत ॥ सो सकल लोक फिरि है दवंत ॥ २७५ ॥
तव ह्वै भीमा औतार धारि ॥ हनि हौं सो दुष्ट वृक्षनि उखारि ॥
पुनि दुर्ग नाम दयंत होय ॥ त्रिलोक विजय जग सफल सोय ॥ २७६ ॥
तब ह्वै दुर्गा औतार धारि ॥ हनि हौं सो दुष्ट पर्वत पहारि ॥ ॥
पुनि रास नाम दैयंत राज ॥ विलादि विश्व जीतै समाज ॥ २७७ ॥

तव रक्त दंति का रूप धारि ॥ हनि हौं सु दुष्ट नख दंति फारि ॥
पुनि दारु नाम ह्वै है सुघोर ॥ त्रिलोक छीन लेहै मजोर ॥ २७८ ॥
तब ह्वै सु भ्रामरी रूप धारि ॥ हनि हौं सु दुष्ट हिर्दय विदारि ॥
पुनि परहि काल कृषि आपु जोर ॥ उप जहि न अन्न अति त्रास घोर ॥ २७९
तव ह्वै साकंभरी रूप आइ ॥ रचि साक सब हि लेहौं जिवाइ ॥
अरु साक नाम हनि हौं दयंत ॥ ताते साकंभरी नाम निभनंत ॥ २८० ॥
इमि जब जब संकट परहि जन्ता ॥ तब तब रक्ष हुं हौं अभय भक्त ॥
नहिं इस मैं कुछ संदेह लाव ॥ यह सुनत भया सब सुक्ख चाव ॥ २८१ ॥

सुरिल्ल ॥

यों कहि दै जग अभय जननि जग वंदिनि ॥
ह्वै गत अंतर ध्यान परम सुख कंदिनि ॥
फूलि गये सुर पूरि नि वैन सुख राजियो ॥
परि हां घर घर मंगल चारु वधाये वाजियो ॥ २८२ ॥

दोहा ॥ इहि विधि सुरथ समाधि सुनि श्री भवानि गुन गाथ ॥
मुक्ति भक्ति फल दंड जग हैं सब जिन के हाथ ॥ २८३
श्री भवानि की भक्ति ते भुक्ति भक्ति उद्योत ॥
भगवति भक्ति विहीन नर उभय दृष्टि ते होत ॥ २८४
ताते भगवत भक्ति निजु करहु एज मनु लाय ॥
मन वांछित फल पाय हो सब लायक जग माय ॥ २८५

इति श्री मार्कण्डेय पुराणे सावर्णि के मन्वन्तरे देवी माहात्म्ये देवी वाक्य समाप्तम् १२ बारवा अध्यायः ॥

सोरठा ॥ इहि सुनि सुरथ समाधि फूल पाइ गहि विनै किय ॥
किमि जग जननि अराधि माना मंत्र कहिये गुरू ॥ २८६

ऋषि उवाच

मोती दाम छंद

सुनो नृप उत्तम मंत्र सुजाम ॥ फलै जिहि ते मनसा सब काम ॥

श्री भवानी भवानि को नाउ उचारु ॥ सो आगम वेद पुराण को सारु ॥ २८७
श्री भवानी के नाम ते औरन मंत्र ॥ श्री भवानी के नाम ते औरन जंत्र ॥
श्री भवानी के नाम ते औरन ध्यान ॥ श्री भवानी के नाम ते औरन ज्ञान ॥ २८८
श्री भवानी के नाम ते और न देव ॥ श्री भवानी के नाम ते और न भेव ॥
श्री भवानी के नाम ते और न जापु ॥ श्री भवानी के नाम ते और न छापु ॥ २८९
श्री भवानी को नाम सजीवन मूरि ॥ हरैं भै रोग करैं दुख दूरि ॥
श्री भवानी को नाम फलै फल चारि ॥ सो भक्ति चिंतामनि दृष्ट विचारि ॥ २९०
श्री भवानी को नाम है पूरन जापु ॥ भजैं विधि विस्नु सदा शिव आपु ॥
इहै हृदय धरि नृप राय ॥ श्री भवानी भवानी रहो लौ लाय ॥ २९१ ॥
श्री भवानी जपे सब है है काज ॥ श्री भवानी भवानी जपो तुम राज ॥
श्री भवानी जपे दुख है हैं दूरि ॥ श्री भवानी को जानो राज पर पूरि ॥ २९२

दोहा ॥ इहि सिख सुनि सुख पाइ पर उगरे सुरथ समाधि ॥
नदी तीर आस्थित भये श्री भवानि व्रत साधि ॥ २९३ ॥

छप्पै ॥

नदी तीर विवि वीर थापि मृन्न से श्री मूरति ॥
पूजि रुचिर फल फूल चित्त धरि सुंदर सूरति ॥
इक टक दृष्टि लगाइ दृष्ट चरन न चित चरचत ॥
श्री भवानि येत वानि जपति निति प्रति हित सरसत ।
नख भूषन प्यासन त्रास भै सिंह वाघ गुंजत निकट
इमि तीन वर्ष व्रत देखि के सु है प्रसन्न अंबा प्रगट ॥ २९४

दोहा ॥ प्रगट कही परमेश्वरी माग नृपति वर दान ॥ ॥
सुनि पाइ परे नृप प्रेम सों किय विनती परिवान ॥ २९५

राज उवाच

दोधक छन्द

देहु अभै वर मो भय भंजनि ॥ मोरन जीति करो रन गंजिनि ॥
मारि सवै सत्रनि कहि जीतहु ॥ राज लहौं परिवारहि भेटहुं ॥ २९६

दुर्ग्वरी उवाच

राज लहो नृप सत्रनिजीतो ॥ जाय मिलो अपने कुल होतो ॥
अन्त मन्वन्तरको पदु पावो॥सूर्य वंस सावरन कहावो ॥२९७॥

मोटक छन्द

इतनी सुनि भूपति पाय परो ॥ मन ते अधिकै वर काज सरो ॥
पुनि बानिय सो जग मात कही॥वरमाग समाधि सो देहुं सही॥२९८॥

छप्पे

सुनि समाधि किय विनय सुनहु जननी जग वंदिनि
जग असार भ्रम सकल कहा मागहु सुर चंदिनि॥
देहु मोहि विज्ञान मोह माया भ्रम छुट्टहि ॥ ॥
जन्म मरन दुखमिटै कर्म बंधन भै टुट्टहि ॥
निज प्रेम भक्ति आनंद में रहौं सदा तुम्हरे सरन॥
उर ओर भ्रम्म उपजै नहीं सुसेंउ दिनदिन लै चरन॥२९९

दुर्ग्वरी उवाच

सोरठा॥ तोहि तोहि विज्ञान मोह भ्रम माया कटै ॥
वसै हृदय मम ध्यान जीवन मुक्ति समाधि तुव॥३००

दोधक छन्द

यों कहिकै जनसों यह वानी ॥ अंतर ध्यान भई मह रानी ॥
सिद्धि भयो सु समाधि प्रवीना॥ज्ञान वढ्यो मन ध्यानहि लीना॥३०१॥
राउ गयो अपने घर काजा ॥ सत्रुनि जीति भये मह राजा ॥
देश प्रसिद्धि करी यह वानी॥ पूजि सवै जग आदि भवानी॥३०२॥
दोहा॥ इहि विधि सुरथ समाधि कहु वर दीन्ह्यो जग माइ॥
रई ते परवत करो रह्यो जक्त जसु छाइ ॥ ३०३॥
जक्त जीव जल थल सकल एकहि से सब व्यापि॥
श्री भवानि की भक्ति ते भयो सो वढ्यो प्रतापि॥३०४॥

दंडक छन्द

ब्रह्म बिस्नु रुद्र इन्द्र चन्द्रादिक देव दैत कीट हू पतंग मंग अंग इति थापु है॥ सब के शरीर एक मान समान जानि सब ही में आतमा समान पुनि आपु है॥ देखिये शति रूप भिन्न करनी अनन्य भने ऐसें सिर मोर येक कीट पद चापु है॥ जैसी जहां भक्ति तैसी तहां शक्ति विधि वान ये है श्री भवानी जू की भक्ति को प्रतापु है॥ ३०५॥

दोहा॥ सुर नर मुनि गंधर्व गन जाचक सबै वखानि॥
तिहूं लोक तिहूं काल में दाता एक भवानि॥३०६॥

मदन मनोहर छन्द

दई शक्ति ब्रह्मै भये विश्व कर्त्ता दई शक्ति विस्नै प्रजा पालि जानी॥
दई शक्ति सेसै भये भूमि धर्त्ता दई शक्ति रुद्रै प्रलै घात थानी॥
दई शक्ति चंद्रै छपा जोति छाई दई शक्ति भानै प्रकाशै भवानी॥
अनन्यै भनै देवता शक्ति जाचै तिहूं लोक में एक दाता भवानी॥ ३०७॥
भजै सिद्धि साधू मुनिन्द्रा अराधै लहै ऋद्धि सिद्धै फरै सिद्धि वानी॥
भजै राज राजै फुरै सस्त्र विद्या जुरे युद्ध जीतै विजै राज धानी॥
भजै भक्ति योगी लहै मुक्ति अंते कवित्वै करै जे चहै वाक वानी॥
अनन्यै भनै सर्वदा सर्व पूरी सबै विश्व में एक दाता भवानी॥ ३०८॥
भजै सारदा ते लहै बुद्धि विद्या गणेशै भजै ते लहै सिद्धि वानी॥
भजै विस्नु को तो लहै मुक्ति अंतै विभौ लछिमी के भजै जन्न जानी॥
जिते देवता भे वता को विचारे कला जौन जामें सुहे तासु दानी॥
अनन्यै भनै एक को एक दाता सदा सर्वदा सर्व दाता भवानी॥ ३०९॥
सदा सर्व दाता सदा सर्व कर्त्ता सदा सर्व रूपक कहै वेद वानी॥
न आदै न अंता कहावै अनंता नियंता सबै लोक की लोक रानी॥
हरी शंभु ब्रह्मा करैं भक्ति जाकी धरैं ध्यान योगी तपी सिद्धि ज्ञानी॥
अनन्यै भनै जो रहै गुप्त रूपा कहै जोति जासो वहै है भवानी॥ ३१०॥
दोहा॥ गुप्त वहै प्रगटै वहै निकट वहै औ दूरि॥ ॥

श्री भवानि त्रिभुवन विषे रही सवनि भरिपूरि ॥ ३११
जो जिहि भांति भजे जहां ताको तहां प्रतक्षि ॥
त्रिभुवन व्यापक शक्ति निजु श्री भवानि शुभ लक्षि ॥ ३१२
श्री भवानि शुभ लक्षनी परम सुन्दरी जानि ॥
ताको सुंदर चरित यह अक्षर अनन्य बखानि ॥ ३१३ ॥
जो यह सुंदरीचरित को पढ़ै सुनै मन लाय ॥
मन वांछित फल देहि तिहि श्री भवानि जग माय ॥ ३१४

इति श्री मार्कण्डेय पुराणे सावर्णि के मन्वन्तरे देवी माहात्म्ये सुरथ वैश्य वर प्रदानं १३ तेरहवां अध्यायः ॥ इति श्री सुन्दरीचरित्र सम्पूर्णम् ॥ +

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
सत्य नारायण की कथा टी-	प्रबोधचन्द्रोदय नाटक	ज्ञान स्वरोदय
का सहित	भजना वली	निघण्टु भाषा
शार्ङ्गधर भाषा टीका सहित	गीत गोविन्द नागरी	सुख सागर
सिद्धान्त चन्द्रिका	कृष्ण बाल लीला	ब्रज विलास
मुहूर्त्त गण पति	कृष्ण सागर	सिंहासन बत्तीसी
शनिश्चर की कथा	कायस्थ दर्पण	शुक बहत्तरी
अमर कोष प्रथम काण्ड	हारीत स्मृत नागरी	छन्दोर्णव पिङ्गल
अमर कोष तीनों काण्ड	भगवत गीता सटीक नागरी	बाल बोध
भाषा टीका सहित	कमीशन बरोदा	हिदायतनामा मालगुजारी
अनेकार्थ प्रकाश	जगत विनोद नागरी	हिदायतनामा बन्दोबस्त
तुलसी शब्दार्थ प्रकाश	रामायण राम विलास	ताजीरात हिन्द अर्थात् ऐक्
राम कलेवा	कल्प सूत्र भाषा नागरी	४५ सन् ई०
आनन्दामृत वर्षिणी	यमुना लहरी	ऐक् २५ सन् १८६१ ई० आदि के
गङ्गा लहरी	सहस्र रजनी चरित्र	फौजदारी
दोहा वली रत्ना वली	षट् पंचाशिका	मजमूआ ऐक् सगान अव-
चित्र चन्द्रिका	विनय पत्रिका नागरी सटीक	ध जिस के साथ नीचे लि-
कविकुल कल्पतरु भाषा	रामायण बड़ी	खे हुये ऐक् संयुक्त हैं॥
स्त्री दर्पण	तथा हिन्दाई	ऐक् १३ सन् १८६३ ई०
सङ्ग्रह शिरोमणि	वृन्द सभा नागरी	ऐक् २४ सन् १८६५ ई०
शिवार्चन	जातक चन्द्रिका नागरी	ऐक् १६ सन् १८६५ ई०
समर बहार बिन्द्राबन	याज्ञवल्क्य भाषा टीका स-	ऐक् नम्बर २६ सन् १८६६
औषधि सङ्ग्रह कल्पवल्ली	हित	ई०
श्री दुर्गा जी मूल	भगवद्गीता विष्णुसहस्र	ऐक् नम्बर १३ सन् १८६०
गुल बका वली	नाम सहित	ई०
प्रेम रत्न	लघु जातक भाषा टीका सहि-	ऐक् २० सन् १८६६ ई०
बन यात्रा	त	ऐक् २४ सन् १८७१ ई०
बारह मासा बलदेव प्रसाद कृत	कल्प सूत्र	ऐक् १० सन् १८५९ ई०
कथा चित्र गुप्त	भाषा जातक लङ्कार	ऐक् ५ सन् १८६१ ई०

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
ऐक्ट १० सन् १८६२ ई०	सूरजपुर की कहानी	अक्षरावली
ऐक्ट १८ सन् १८६९ ई०	विद्या चक्र	पशु चिकित्सा
ऐक्ट २६ सन् १८६७ ई०	भूगोल तत्व	कवित्त रत्नाकर
क़वायद रेलवे और उसके	पदार्थ विद्या सार	बिहारी सतसई सटीक
साथ क़ानून भी हैं॥	वर्ण प्रकाशिका	अपूर्व कथा
ऐक्ट १८ सन् १८७३ ई०	पत्र दीपिका	वैसवी सन्ध्या
अर्थात् क़ानून लगान मु-	भारत खण्ड का	विश्राम सागर
मालिक मग़रबी व शिमाली	क्षेत्र प्रकाश	भूगोल दर्पण
ऐक्ट ११ सन् १८७४ ई०	पत्र हितैषिणी	देवी भागवत नागरी
ऐक्ट १० सन् १८७२ ई०	रामायण सातो काण्ड	विद्यार्थी की प्रथम पुस्तक
	बाल काण्ड	महाभारत भाषा छन्द प्र-
सरिश्तह तालीम की पुस्तकें	अयोध्या काण्ड	बन्ध में जो श्री मन्महारा-
अक्षर दीपिका	आरण्य काण्ड	जाधिराज उदित नरायण
विद्यांकुर	किष्किन्धा काण्ड	सिंह जी काशी नरेश ने
बाल बोध	सुन्दर काण्ड	गोकुल नाथादि कवी श्व-
भाषा चन्द्रोदय	लङ्का काण्ड	रों से रचना कराय कल-
इंगलिस्तान का इतिहास	उत्तर काण्ड	कत्ते में छपवाया था वही
गणित लता १ भाग	अक्षरारम्भ	श्री युत माधव सिंह मह
तथा २ भाग	भाषा तत्व दीपिका	अमेठी नरेश की सहा-
गणित प्रकाश १ भाग	बाल भूषण	यता और अनुराग से इ-
तथा २	हिदायत नामा मुदर्रिसा-	स यन्त्रालय में अत्युत-
तथा ३	न हल्क़ह बन्दी	म टेप के पुष्ट अक्षरों में
तथा ४	शिक्षा वल्ली	१९ पर्व्व बड़ी शुद्धता
क्षेत्र चन्द्रिका १ भाग	भोज प्रबन्धसार	से छपा है॥
रेखा गणित १ भाग	राज नीति	सिद्धान्तचन्द्रिका
तथा २	स्त्रियों की हितो पत्रिका	
बीज गणित १ भाग	धात्वर्णव	
तथा २ भाग	अवध का भूगोल	